सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि
एक प्रति ₹ 30/-
वार्षिक ₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

जनवरी 2022 वर्ष 21 अंक 11

मैं मुसलमान हूँ !

मैं मुसलमान हूँ और फ़ख्र के साथ महसूस करता हूँ कि मुसलमान हूँ, इस्लाम की 1400 बरस की शानदार रवायतें मेरे वरसे में आई हैं। मैं तैयार नहीं कि इसका छोटे से छोटा हिस्सा भी ज़ाए होने दूँ। इस्लाम की तालीम, इस्लाम की तारीख़, इस्लाम के उलूम व फुनून, इस्लाम की तहज़ीब मेरी दौलत का सरमाया है और मेरा फ़र्ज़ है कि इसकी हिफ़ाज़त करूँ।

(मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
नया साल	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
सुन्नत की पैरवी का शौक	हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी	11
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	14
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	16
मुस्लिम दुनिया में उच्च शिक्षा	डॉ0 मुहम्मद इक़्तिदार हुसैन फ़ारूक़ी	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	21
मुस्लिम समाज की बुनियादी ख़राबियाँ	मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	23
मौलिक अधिकार और मूल कर्तव्य	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	26
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	28
हमारा संकल्प	नाज़िश प्रतापगढ़ी	30
अमन व अमान के नाम पर	इं0 जावेद इक़बाल	31
रोज़े महशर के पाँच सवाल	शगुफ़्ता ज़ाकिर	34
मोबाइल का दुरुपयोग	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	38
सेकंड की रिटायरमेंट	राहुल पाण्डेय	39
औषधीय गुणों का भंडार है छुईमुई	डॉ0 महेश नारायण गुप्ता	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुअ्नि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-यूनुसः-

अनुवाद–

और जब हम लोगों को मुसीबत पहुँचने के बाद रहमत (दया) का मज़ा चखाते हैं तो वे तुरन्त ही हमारी आयतों में बहाने करने लगते हैं, कह दीजिए कि अल्लाह की तदबीर (उपाय) सबसे तेज है, तुम जो भी चालें चल रहें हो हमारे फरिशते निश्चित रूप से वे सब लिख रहे हैं(21) वही है जो जल व थल में तुम को लिए फ़िरता है यहां तक कि जब तुम नाव में सवार होते हो और अच्छी हवा के द्वारा वे लोगों को ले कर चलती हैं और लोग उसमें मगन हो जाते हैं तो एक तीव्र आंधी उनको आ लेती है और हर ओर से लहरें उन पर उठती हैं और वे समझ लेते हैं कि वे घिर गये हैं तो वे उपासना में एकाग्र हो कर अल्लाह को पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर आभारी लोगों में होंगे(22) फिर जब वह बचा लेता है तो बस वे धरती में नाहक सरकशी (उद्दण्डता) करने लगते हैं, ऐ लोगो! यह सरकशी तुम पर ही (पड़ने वाली) है, दुनिया के जीवन में मज़े उड़ा लो फिर हमारे ही पास तुम को लौट कर आना है फिर तुम जो भी करते रहे थे वह सब हम तुमको बता देंगे(23) दुनिया की ज़िन्दगी का उदाहरण ऐसा ही है जैसे हमने ऊपर से पानी बरसाया उससे धरती की हरियाली खूब घनी हो गई जिसको आदमी और पशु खाते हैं, यहाँ तक कि जब धरती की शोभा चरम पर हो जाती है और वह खूब भली लगने लगती है और उसके मालिक समझ लेते हैं कि अब वह उनके हाथों में है, तो रात में या दिन में हमारा निर्णय आ पहुंचता है बस हम उसको भूसा बना कर रख देते हैं जैसे कल कुछ वह थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें उन लोगों के लिए खोल खोल कर बयान करते हैं जो सोच–विचार करते हैं(24) और अल्लाह सलामती के घर की ओर बुलाता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर चला देता है[1](25) जिन्होंने भले काम किये उनके लिए भलाई है और बढ़ चढ़ कर है, न उनके चेहरों पर वैमनस्य (कदूरत) होगी न अपमान, यही लोग जन्नत वाले हैं वे हमेशा उसी में रहेंगे(26) और जिन्होंने बुराईयां कमाई तो हर बुराई का बदला उसी के पास है और अपमान उन पर छाएगा, कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला न होगा, जैसे उनके चेहरों पर रात की अंधेरी परतें चढ़ा दी गई हों यह उसी में हमेशा रहेंगे(27) और जब हम सबको इकट्ठा कर लाएंगे फिर शिर्क करने वालों से कहेंगे कि तुम और वे जिनको तुमने शरीक किया अपनी जगह ठहरो, फिर हम उनमें फूट डाल देंगे और उनके साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी उपासना तो करते न थे(28) बस अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है हमें तो तुम्हारी उपासना का कुछ पता ही न था(29) वहां हर व्यक्ति जो भेज चुका है उसको जाँच लेगा और वे सब अपने असली मालिक की

ओर लौटा दिये जाएंगे और जो कुछ गढ़ा करते थे वह सब उनसे हवा हो जाएगा[2](30) पूछिए कि कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी पहुँचाता है या कौन है जो कान और आँखों का मालिक है और कौन निर्जीव से जीव को निकालता है और जीव से निर्जीव को निकालता है और कौन कार्य की व्यवस्था करता है तो वे (जवाब में) यही कहेंगे कि ''अल्लाह'' तो आप उनसे कहिए कि फिर तुम डरते नहीं(31) तो यही अल्लाह है जो तुम्हारा असली पालनहार है तो सत्य के बाद पथ भ्रष्टता के सिवा और है क्या? तो तुम कहाँ से पलट कर जा रहे हो(32) इसी तरह आपके पालनहार की बात अवज्ञाकारों के लिए पक्की हो चुकी कि वे ईमान लाने वाले नहीं[3](33)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. आम लोगों का हाल बयान हो रहा है कि जब मुसीबत में पड़ते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं फिर जब मुसीबत दूर हो जाती है और राहत व आराम का दौर आता है तो सब भुला देते हैं, इसको उदाहरण दे कर बताया गया है फिर इसको साफ़ किया जा रहा है कि सब कुछ अल्लाह ही के हाथ में है और इसको भी उदाहरण से समझाया जा रहा है कि एक खेती करने वाला सब कुछ तैयार कर लेता है और इरादा कर लेता है कि कल खेती काट लेगा लेकिन अचानक वह सब अल्लाह के आदेश से नष्ट हो कर रह जाती है, इसमें यह भी संदेश दिया जा रहा है कि इंसान हर हाल में अल्लाह को याद रखे राहत व आराम में पड़ कर मस्त न हो जाए, हमेशा यह दिमाग़ में रखे कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है, आज सब कुछ है कल का कोई भरोसा नहीं, और सही रास्ता अल्लाह ने बता दिया, वही सलामती के घर ले जाने वाला है और हिदायत (सत्यमार्ग दिखाना) भी उसी के हाथ में है।

2. जिन चीज़ों को भी अल्लाह के साथ शरीक किया गया वे सब क़यामत के भयानक दृश्यों को देख कर अपना दामन झाड़ लेंगे और शिर्क करने वालों से विमुखता प्रकट करेंगे, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का अपने मानने वालों और खुदा का बेटा कहने वालों से विमुखता का वर्णन सूरह माइदा (116-120) में गुज़र चुका, उस समय हर व्यक्ति के सामने कामों की वास्तविकता आ जाएगी।

3. जिन्होंने बात न मानना तय ही कर लिया और विचार करना ही नहीं चाहते कि सच क्या और झूठ क्या है, तो ऐसों के लिए ईमान संभव ही नहीं, अल्लाह ने उनके लिए पथभ्रष्टता लिख दी है।

❖❖❖

महब्बते इलाही

दीन व दुनिया की सबसे बड़ी दौलत महब्बत और प्यार है, खास कर वह महब्बत और प्यार जो खुदा को अपने बन्दों के साथ हो, उस महब्बत और प्यार का जिक्र तो सब जगह पाया जाता है लेकिन उसके हासिल करने का ज़रिया क्या हो उसका जवाब कुर्आन ने दिया है कि ''कह दो अगर तुम खुदा से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, खुदा तुम से महब्बत करेगा''।

(आले इमरान-31)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का कारोबार में परेशानी उठानाः–

हज़रत आइशा रज़ि0 बयान करती हैं कि जब हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने खिलाफ़त (आप सल्ल0 के बाद प्रतिनिधित्व) की ज़िम्मेदारी संभाली तो फरमाया– मेरी क़ौम को मालूम है कि मेरे काम की आमदनी मेरे बाल–बच्चों की रोज़ी–रोटी के लिए कम न थी, अब मैं मुसलमानों के काम में व्यस्त हूँ, इसलिए अब अबू बक्र रज़ि0 के बाल–बच्चे इस (सरकारी) माल में से खाएंगे और मैं मुसलमानों के फायदे के लिए और उनकी तिजारत को बढ़ाने के लिए काम करूँगा।

(बुखारी)

बैअे सरफ का हुक्मः–

हज़रत बराअ बिन आजिब और ज़ैद बिन अरक़म रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के ज़माने में हम लोग तिजारत करते थे, हमने आप सल्ल0 से बैअे सरफ (अर्थात सोने चाँदी को खरीदने–बेचने) के बारे में पूछा तो आप सल्ल0 ने फरमायाः– कि अगर नक़द हो तो कोई बात नहीं और अगर उधार हो तो सही नहीं है।

(बुखारी)

कर्ज़दार से मुतालबा करने में नर्मी और खरीद व फरोख्त में सखावत (दानशीलता):–

हज़रत हुज़ैफः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह का एक बन्दा जिसको अल्लाह ने माल दिया था अल्लाह के पास हाज़िर किया गया (कब्र में या हश्र के दिन), अल्लाह तआला ने उससे पूछा कि तुम ने दुनिया में क्या–क्या कर्म किये? फिर आप सल्ल0 ने यह आयत पढ़ी, ''वला यक्तुमूनल्लाह हदीसा'' (वो अल्लाह से कोई बात छुपा न सकेंगे), वह बन्दा कहेगा कि तूने मुझको माल दिया, मैं लोगों के खरीद व फरोख़्त (क्रय–विक्रय) के समय नर्मी और सख़ावत (दानशीलता) से काम लेता था, मालदार से आसानी का मामला करता था और गरीब आदमी को मोहलत देता था, अल्लाह तआला ने फरमाया, मैं तुझसे ज़्यादा माफ़ कर देने का हक रखता हूँ, फिर फरमायेगाः मेरे बन्दे को माफ करो। उक्बः बिन आमिर और अबू मस्ऊद अंसारी रज़ि0 ने कहा कि हमने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से इसी तरह सुना है।

(मुस्लिम)

बेची जाने वाली चीज़ का ऐब छुपाने पर सख़्त रोक और फिटकारः–

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अनाज के एक ढेर के पास से गुज़रे, आप सल्ल0 ने अपना हाथ उस ढेर के अन्दर घुसा दिया तो आपकी उंगलियों ने भीगापन महसूस किया, आप सल्ल0 ने उस अनाज बेचने वाले दुकानदार से पूछा यह भीगापन कैसा है? उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0 अनाज पर बारिश की बूंदे पड़ गई थीं, आपने फरमाया इस भीगे हुए अनाज को तुमने ढेर के ऊपर क्यों न रहने दिया, ताकि खरीदने वाले लोग इसको देख सकते, जो आदमी धोखेबाजी करे वह हम में से नहीं है।

(बुखारी)

झूट से कारोबार की बरकत का उठ जानाः–

हज़रत हक़ीम बिन हिज़ाम रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– बेचने–खरीदने वालों को जब तक अलग न हों मामले को बाकी रखने या खतम कर देने का विशेष अधिकार है, अगर वो सच बोलें तो उनके कारोबार में बरकत और सम्पन्नता होगी, और अगर झूट बोलेंगे तो उनके कारोबार की बरकत हटा दी जाएगी।

धोखेबाज़ कारोबारी का अंजाम बुरा होगाः–

हज़रत रिफाअः बिन राफेअ रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि ताजिर (व्यवसायी) लोग अलावा उनके जिन्होंने अल्लाह को सामने रखा, भलाई और सच्चाई का रास्ता अपनाया, क़यामत में फाजिर और बदकार (बुरे लोगों के रूप में) उठाए जाएंगे। (तिर्मिज़ी)

पेड़–पौधे लगाने और खेती–बाड़ी करने में लाभ ही लाभ हैः–

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया–मुसलमान कोई पेड़ लगाए या खेती करे और उससे इन्सान फायदा उठाए या परिन्दे आदि तो उसके लिए सद्क़ा है। (बुखारी व मुस्लिम)

बटाई पर ज़मीन देनाः–

हज़रत अम्र बिन दीनार ताबई ने बयान किया है कि मैंने ताऊस (ताबेई) से एक बार कहा– आप बटाई पर ज़मीन उठाना छोड़ देते तो अच्छा होता, क्योंकि लोगों का ख्याल है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इससे रोका था, तो उन्होंने कहा– मेरा तरीक़ा यह है कि मैं किसानों को खेती के लिए ज़मीन भी देता हूँ और उसके अलावा भी उसकी मदद करता हूँ, और उम्मत के बड़े आ़लिम (धर्मगुरु) यानी अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने मुझे बताया था कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ज़मीन को बटाई पर उठाने से रोका नहीं था, हाँ! यह फरमाया था कि अपनी ज़मीन अपने दूसरे भाई को खेती के लिए दे देना उससे बेहतर है कि उस पर कोई निश्चित लगान वसूल करे। (बुखारी)

पैदावार के आधे हिस्से का मामलाः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि0 फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने खैबर के यहूदियों से पैदावार (खेती) के आधे हिस्से पर लेन–देन किया। आप सल्ल0 अपनी बीवियों को सौ वस्क देते, 80 वस्क खुजूर और बीस वस्क जौ। हज़रत उमर रज़ि0 ने खैबर के हिस्से कर दिए और आप सल्ल0 की बीवियों को इख़्तियार (विशेष अधिकार) दिया कि पानी वाला हिस्सा ले लें या पहली जैसी हालत पर रहने दिया जाए, तो उनमें से किसी ने ज़मीन वाला हिस्सा लिया और किसी ने वस्क वाला हिस्सा। हज़रत आइशा रज़ि0 ने ज़मीन वाला हिस्सा पसन्द किया। (बुखारी)।

ख़्वाब के आदाबः–

हज़रत अबू सईद खुदरी रजि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब कोई अच्छा ख़्वाब देखो तो समझ लो कि अल्लाह तआ़ला की तरफ से है तो फिर अल्लाह की तारीफ करो और उसको बयान करो।

एक रिवायत में है कि उसको अपने शुभचिन्तकों से बयान करो और अगर कोई बुरा ख़्वाब देखो तो शैतान की तरफ से समझो। अतः उसकी बुराई से पनाह माँगो और उसका ज़िक्र किसी से न करो तो उसके नुक़सान से बच जाओगे। (बुख़ारी–मुस्लिम)

❖❖❖

सम्पादकीय

नया साल

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

''सच्चा राही'' का यह अंक जिस समय आपके हाथ में होगा उस समय आप पिछले साल को अलविदा कह रहे होंगे और अगले साल का आप स्वागत कर रहे होंगे। इंसान एक निर्धारित समय के लिए दुनिया में आया है वह निर्धारित समय जब समाप्त हो जाता है तो वह अपने पालनहार और अपने स्वामी के पास पहुँच जाता है, किसी इंसान को यह नहीं मालूम कि उसकी ज़िन्दगी का अन्तिम दिन कौन है? दुनिया की रंगीनियों में इन्सान ऐसा मस्त और व्यस्त है, कि मौत जैसी यक़ीनी चीज़ को भूला हुआ है।

कुर्आन इस वास्तविकता को बार बार याद दिलाता है ''हर जान को मौत का मज़ा चखना है और क़यामत के दिन तुम्हें पूरे के पूरे बदले दिये जाएंगे तो जो भी दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में पहुँचा दिया गया तो उसका तो काम बन गया और दुनिया की ज़िन्दगी तो धोखे के सामान के सिवा कुछ भी नहीं''।

(सूरः आले इमरान, आयत नं0 184)

इसी प्रकार अल्लाह ने सूरः मोमिनून में फ़रमाया ''क्या तुमने यह समझ रखा है कि हमने तुम को यूं ही पैदा कर दिया और तुम पलट कर हमारे पास नहीं आओगे''।

(सूरः मोमिनून आयत–115)

संसार के स्वामी और पालनहार ने इन्सान को एक विशेष उद्देश्य के साथ धरती पर भेजा यदि उसने उस उद्देश्य को पूरा नहीं किया तो उसने अपने जीवन को नष्ट कर दिया, उस उद्देश्य को दुनिया के स्वामी अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अन्तिम किताब कुर्आन मजीद द्वारा खोल कर बयान कर दिया है, इन्सान का मौलिक कर्तव्य है कि अपने सृष्टा और अपने बनाने वाले के आदेशानुसार अपने जीवन का एक एक पल उपयोग करे, उसके दिन–रात का रिकार्ड तैयार हो रहा है ''उस दिन लोग समूह दर समूह लौटेंगे ताकि उनको सब काम दिखा दिये जाएं, बस जिसने कण मात्र भी भलाई की होगी वह उसको देख लेगा और जिसने कण मात्र भी बुराई की होगी वह उसको देख लेगा''।

(सूरः अल–आदियात–5,6,7)

अल्लाह के आदेशों में सबसे बड़ा आदेश यह है कि केवल उसी की उपासना की जाए उसकी उपासना और इबादत में दूसरे को साझीदार न बनाया जाए, कुर्आन ने इसको बहुत बड़ा अत्याचार और ज़ुल्म कहा है, यह ऐसा जुर्म है जो अल्लाह के नज़दीक़ क्षमा योग्य नहीं, समय एक बहुमूल्य चीज़ है इन्सान अपने को अनावश्यक कामों और बातों से बचाए, केवल वही काम और बात करे जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया, ज़बान से वही बात कहे जो नेकी और सच्चाई की हो, वरना ख़ामोश रहे।

इन्सान को अपने कामों की समीक्षा करनी चाहिए और अपनी ग़लतियों को स्वीकार करना चाहिए और हर समय अपने को सुधारने की कोशिश करनी चाहिए, उसको अपने

हर छोटे बड़े कामों के साथ सबसे बड़ी अदालत में खड़ा होना है, वहां ऐसी पक्की गवाहियाँ होंगी जिसको किसी प्रकार झुठलाया नहीं जा सकता, वहाँ का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा, और सदैव के लिए होगा, कुर्आन हमें चेतावनी देता है और सावधान करता है ''हर व्यक्ति ख़ूब देख ले कि उसने कल के लिए क्या तैयारी की है और अल्लाह से डरते रहो बेशक तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी ख़ूब ख़बर रखता है''।

(सूरः अल–हश्र आयत नं0 18–19)

यह आने वाला कल क़यामत का दिन होगा जिसमें प्रथम दिन से अन्तिम दिन तक सारे इन्सान जमा होंगे और एक आवाज़ लगेगी ''आज किस का राज है, केवल अल्लाह ही का जो अकेला है, ज़बरदस्त है''।

(सूरः अल–मोमिन आयत नं0 16)

दुनियावी सहारे सब झूठे साबित होंगे, सच्चाई वास्तविक रूप में सामने आएगी। क़यामत की घड़ी सख़्त घड़ी होगी, रिशतेदारी और नातेदारी का कोई सम्बन्ध काम न आएगा, ईमान और आमाल की बुनियाद पर उस समय इन्सान के लिए दो ठिकानों में से एक ठिकाना होगा जहन्नम या जन्नत, यह जगहें सदैव के लिए होंगी, जहन्नम हर हाल में कष्ट दायक जगह, जन्नत केवल आराम और सुख की जगह। जन्नत और जहन्नम का निर्णय पाँच कठिन प्रश्नों के उत्तर पर निर्भर होगा, प्रत्येक इन्सान उन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहे, अभी हमारे और आपके पास समय है कि हम उचित जवाब दे सकें और जन्नत के हक़दार बन जाएं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 नबी करीम सल्ल0 से बयान करते हैं कि इन्सान के क़दम क़यामत के रोज़ अपने रब के सामने से नहीं हटेंगे जब तक उससे पाँच सवाल न कर लिए जाएं, पहला सवाल उसकी उम्र के बारे में कि उसने अपनी उम्र किन कामों में गुज़ारी, इसी तरह उसने अपनी जवानी कहाँ लगाई, उसने माल कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया, उसने जो इल्म हासिल किया उसके अनुकूल कितना अमल किया यह पूरी ज़िन्दगी का निचोड़ होगा, यह अल्लाह की नेमतें हैं जो हमको दी गई हैं, इन नेमतों के बोर में ज़रूर पूछा जाएगा, हमारी उम्र बरफ़ के समान पिघल रही है, हमें इसका एहसास नहीं, मिनट से घण्टे, घण्टे से दिन, दिन से हफ़्ते, हफ़्ते से महीने और साल बन रहे हैं, नया साल जब आता है तो हम एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं यह नहीं सोचते कि हमारी ज़िन्दगी का एक साल कम हो गया।

किस क़दर जल्द गुज़रते हैं जहाँ में माह व साल
काश हमको भूल कर आए कभी इसका ख़याल

❖❖❖

जम्हूरियत

इस राज़ को इक मर्दे फ़रंगी ने किया फ़ाश
हर–चंद कि दाना इसे खोला नहीं करते
जम्हूरियत इक तर्ज़े हुकूमत है जिस में
बंदे को गिना करते हैं तौला नहीं करते
(अल्लामा इक़बाल रह०)

सुन्नत की पैरवी का शौक़ पैदा कीजिए

हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िन्दगी शरीअत इस्लामी का अहम स्रोत होने के साथ–साथ एक मुसलमान की ज़िन्दगी के लिए अनुसरण योग्य अनिवार्य आदर्श है। इस पवित्र ज़िन्दगी को सुन कर और पढ़ कर मुसलमान का दिल व दिमाग़ जो कुछ हासिल करता है उससे उसकी दुनिया भी बनती है और दीन भी बनता है। आप सल्ल0 ने जो फ़रमाया और आप सल्ल0 ने जो किया और आप सल्ल0 ने जो देखा और होने दिया, उन सबको हदीस का नाम दिया जाता है और हदीस शरीअत इस्लामी का बहुत बड़ा स्तम्भ है, लिहाज़ा एक मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह हुज़ूर सल्ल0 की मुबारक ज़िन्दगी का अध्ययन जी लगा कर करे अपने जलसों में, तक़रीरों में, गुफ़्तुगू में आप सल्ल0 की बातों का चर्चा करे, उन बातों से सबक़ ले, और उनके अनुसार अमल करने की कोशिश करे जिनको प्रमाणित पुस्तकों में नक़ल किया गया है, और जिन को इन्सानी ज़िन्दगी से गहरा सम्बन्ध है चाहे वह ज़िन्दगी दीन के विषय में हो या दुनिया के विषय में हो।

इसमें यह देखने की ज़रूरत है कि कितने लोगों की ज़िन्दगियों में उनके सुनने और जानने से परिवर्तन आया, कितने लोगों की ज़िन्दगी शरीअते इस्लामी के सांचे में ढली? अगर ऐसा नहीं हुआ तो इसका मतलब है कि जलसा करने वालों में कोई न कोई कमी और लापरवाही है कि जो फ़ाइदा हासिल कर सकते थे वह फ़ाइदा हासिल न कर सके, और उस उद्देश्य को पूरा न कर सके जिस उद्देश्य के नाम पर यह जलसे किये जाते हैं, वह केवल मोजिज़ात (ईश्वरीय चमत्कार) या कमालात के बयान में सीमित हो कर रह गये हैं जिन पर आप सल्ल0 के उम्मतियों का अमल मुम्किन नहीं या बहुत ही मुशकिल है, देखने में आया है कि न तक़रीर करने वाले इसका ख़्याल करते हैं कि हुज़ूर सल्ल0 की मुबारक ज़िन्दगी में शिक्षाप्रद पहलुओं को बयान करे और न सुनने वालों को इसका शौक़ है कि वह बातें सुनें जिनसे उनको सबक़ मिलता हो, चमक दमक और ज़ौक व पसन्द की बातों से जलसा तो शोभनीय हो जाता है लेकिन फ़ाइदा कितना होता है? इससे फ़ाइदा पहुँचने की ओर ध्यान देने की ज़रूरत है, यदि इन सब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िन्दगी की अमली रूह बयान की जाती और पवित्र ज़िन्दगी का उद्देश्य चमकता नज़र आता तो ज़िन्दगियाँ रौशन हो जाती और ज़िन्दगियाँ सुधर जाती, इस समय उम्मत की सबसे बड़ी ज़रूरत यही है।

उम्मत अपने नबी के रास्ते से हट गई है:–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस दुनिया में जब तशरीफ़ लाये तो पैदा होने से पहले और पैदा होने के कुछ

सालों बाद माँ–बाप के प्यार से वंचित हो गये, और थोड़े बड़े हुए तो महब्बत करने वाले दादा भी नहीं रहे, केवल चचा की सहानुभूति और प्यार बाक़ी रहा, चचा ग़रीब थे इसलिए आप को भी ग़रीबी का सामना करना पड़ा, यतीमी फिर गुरबत, दोहरी परेशानी, आप सल्ल0 कुछ बड़े हुए तो, आर्थिक ज़रूरतों के अनुसार कारोबार और व्यापार की ओर ध्यान दिया, आप की बुद्धिमानी और अमानत रंग लाई, कारोबार की उन्नति से आप की आर्थिक दशा में परिवर्तन आया इससे आप सल्ल0 ने अपने दयालू चचा की सहायता की, और उनके बोझ को हलका किया, दूसरी ओर क़ौम के सामने आप सल्ल0 के जो उच्च कोटि के आचरण और व्यवहार आए उनसे आप सल्ल0 को सबका प्रेम और आदर मिला, आपका नाम सबने अमानतदार रख दिया और आप सल्ल0 सबकी आँखों का तारा बन गये। हर छोटा बड़ा आप सल्ल0 को बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखता था लेकिन नबूवत की ज़िम्मेदारी मिली और इस बड़े काम के तक़ाज़ों को पूरा करने की आप सल्ल0 ने शुरुआत की तो लोगों के तेवर बदलने और फिर बिगड़ने लगे, उनका पहले वाला, रवय्या बदल गया, वह आप सल्ल0 को कष्ट पहुँचाने लगे, अगर पहले जैसे रहते तो क़ुरैश में आपसे ज़्यादा प्रिय और सम्माननीय व्यक्ति कोई और न होता, आप सल्ल0 क़ुरैश के बादशाह की तरह हो जाते और आप सल्ल0 को बड़ी दुन्यावी मान मर्यादा प्राप्त होती, आप सल्ल0 जो कहते क़ुरैश तुरन्त आज्ञा पालन करते, और आपके लिए सब अपनी निगाहें बिछाते, लेकिन ख़ुदा को आप सल्ल0 से दावत व इस्लाह का काम लेना था आप सल्ल0 को हुक्म हुआ कि क़ौम के अक़ीदों और मज़हबी आदतों की जो बिगड़ी हुई शकलें चल रही थीं, उनकी इस्लाह व सुधार का पैग़ाम सुनाएं, आप सल्ल0 ने रिसालत की ज़िम्मेदारी उठा ली और उसको पूरा करने से जिन तकलीफ़ों का सिलसिला शुरु होना था उसके लिए तैयार हो गये। आपको आराम प्रिय नहीं था, बल्कि इन्सानों की सहानुभूति और हमदर्दी प्रिय थी, मगर दुशमनी का जो तूफ़ान उठा वह ज़बरदस्त था, आप सल्ल0 को अमानतदार और नेक किरदार कहने वाले बिगड़ गये। पहले जो तारीफ़ करते थे अब बुराई करने लगे, पहले आँखों पर बिठाने के लिए तैयार रहते थे, अब पत्थर मारने लगे, इज़्ज़त करने वाले मज़ाक़ उड़ाने लगे, गन्दगी और कीचड़ डालने लगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सब झेला और ख़ुदा का पैग़ाम सुनाते रहे, सच्चाई और इंसानियत के लिए, अल्लाह की आज्ञापालन के लिए सब बरदाश्त करते रहे, जवाब न देते, आज़माइश की घड़ी थी, आप सल्ल0 ने बड़े सब्र से काम लिया, बरदाश्त से बाहर था फिर भी बरदाश्त किया, क्योंकि हुक्मे इलाही था कि बरदाश्त करो जवाब न दो, मुख़ालिफ़त के बावजूद नेकी करने का हुक्म देते और हक़ का पैग़ाम पहुँचाते रहे। तेरह साल इसी सख़्त मेहनत और सब्र में गुज़रे सब्र और बरदाश्त का हुक्म जारी

रहा, यहाँ तक कि वतन छोड़ने पर मज़बूर हुए और दूसरी जगह सफ़र करना पड़ा, फिर अल्लाह की तरफ़ से इजाज़त मिली कि बहुत जुल्म हो चुका अब जवाब दे सकते हो, अब मुक़ाबला पड़े तो मुक़ाबला कर सकते हो, अल्लाह तआला की मदद होगी, यहाँ से मुक़ाबिले की शुरुआत हुई। अल्लाह तआला की जो मदद तक़लीफ़ झेलने और बरदाश्त करने में आती थी, वह मुक़ाबिले की इज़ाज़त के बाद जारी रही और मैदाने जंग में आई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुश्मन हमला करता, आप सल्ल0 के नये वतन मदीने पर चढ़ाई करता, आप सल्ल0 मुक़ाबला करते और बहादुरी का सुबूत देते, यह सब सच्चाई के लिए था, अपने पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए था, पूरी ज़िन्दगी त्याग और कुरबानी की थी। मक्के की 13 साला ज़िन्दगी में भी कुरबानी और मदीने की 10 साला ज़िन्दगी में ख़तरात का मुक़ाबला, कुरबानी उच्च और पवित्र ज़िन्दगी, इंसानियत, रवादारी बरदाश्त, दृढ़ता, वीरता, सज्जनता, महानता, आचरण के भिन्न–भिन्न रूप, यह था आदर्श जीवन और मानवता उपहार।

हुज़ूर सल्ल0 का मुक़ाम बहैसियत नबी के बहुत ऊँचा है, लेकिन इसी के साथ बहैसियत इन्सान के अख़लाक़, महब्बत, हमदर्दी, इन्सान नवाज़ी, ख़ुशअख़लाक़ी, नर्मी, नम्रता, मेहमानदारी, ग़रीब परवरी, दीन दुखियों के साथ सहानुभूति बहुत ज़ियादा थी। एक ओर आप सल्ल0 नबूवत के बलन्द मुक़ाम पर थे और दूसरी ओर मानवता के उच्चतर स्थान पर थे। हमको हुज़ूर सल्ल0 के जीवन चरित्र का अध्ययन दोनों पहलुओं से करना चाहिए, एक तरफ़ यह है कि इससे हमको शरीअत की तालीमात मिलती हैं, जिन पर अमल करके ख़ुदा को राज़ी कर सकते हैं, और अपनी आख़िरत बना सकते हैं।

दूसरी तरफ़ यह कि सीरते नबवी के अध्ययन के समय मानवता और इंसानियत के कैसे कैसे उत्तम आदर्श सामने आते हैं जिनको अपनाने से दुन्यावी एतिबार से और समाज के अन्दर हम एक उच्चतम स्वभाव वाला इंसान बन सकते हैं।

हम केवल रोशनी करके और केवल मोजिज़ात बयान करके ख़ुद अपने को ख़ुश तो कर लेते हैं लेकिन रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुश करने के लिए यह रोशनी और शानदार प्रदर्शन लाभदायक नहीं, लाभदायक तो आप सल्ल0 के पवित्र जीवन चरित्र से प्राप्त फ़ाइदे से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की इत्तिबा करना है, इन्सानों के लिए हमदर्दी और मुहब्बत और इनायत को अपनाना है। हमको देखना चाहिए कि हम अपनी आभिरुचि की तसकीन और दिखावा करना चाहते हैं या रसूल पाक सल्ल0 की ख़ुशी के काम करना चाहते हैं? हमें सीरते पाक की महफ़िलों में इत्तिबाए सुन्नते रसूल सल्ल0 को ज़रूर सामने लाना चाहिए ताकि आख़िरत में आप सल्ल0 से अगर मुलाक़ात मुक़द्दर हो तो आप सल्ल0 यह न फ़रमाएं कि तुमने हमको तो ख़ुश नहीं किया, केवल अपने ही को ख़ुश करते रहे और शान व शिकोह से अपना दिल बहलाते रहे और हमारी सुन्नतें मिटती रहीं।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

फरिश्तों पर ईमानः—

इस्लाम की शिक्षा इन फरिश्तों के सिलसिले में यही है कि इनको मासूम समझा जाए, हाँ इनकी मासूमियत वैकल्पिक नहीं, बल्कि इज्तिरारी (ज़रूरी) है, ये अल्लाह के हुक्म की बाल बराबर भी नाफरमानी नहीं कर सकते, दुनिया की कौमें फरिश्तों के सिलसिले में भी गुमराही का शिकार हुईं, बहुतों ने उनको खुदाई में शरीक़ समझ लिया, मक्के के मुश्रिकों ने उनको खुदा की बेटियां बनाया, अल्लाह तआला उनको शर्म दिलाते हुए फरमाता है, खुद तो बेटी को शर्म का कारण समझते हैं, खुदा के लिए उनको बेटियां ही मिलीं, इरशाद होता हैः—

अनुवादः— *उनके रब के लिए बेटियां हैं और उनके लिए बेटे हैं, या हमने फरिश्तों को औरत बनाया और वो देख रहे थे, अच्छी तरह सुन लो वो जी में गढ़-गढ़ कर कहते हैं, कि अल्लाह के यहाँ औलाद हुई और निश्चित रूप से वो झूठे ही हैं, क्या उसने बेटों के मुक़ाबले में बेटियों को अपना लिया, तुम्हें हुआ क्या है तुम कैसे फैसले करते हो।*

(अल-साफ्फातः 149-154)

एक जगह फरमायाः—

अनुवादः— *"फिर क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुन कर दिए और खुद फरिश्तों को बेटियाँ बना लिया? यकीनन तुम बहुत बड़ी बात कहते हो।"*

(बनी इस्राईल 40)

और फरमायाः—

अनुवादः— *"और उन्हों ने फरिश्तों को जो रहमान के बंदे हैं औरतें करार दिया, क्या वो उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे?" (जुखरूफ-19)*

सूरह अम्बिया में बहुत ही साफ तौर पर फरमायाः—

अनुवादः— *"और वो कहते हैं कि रहमान ने बेटा बना लिया, वो पाक है, हाँ (वो उसके के) सम्मानित बंदे हैं, आगे बढ़ कर बोल नहीं सकते और उसके हुक्म के मुताबिक ही अमल करते हैं, उनके आगे पीछे जो कुछ है वो सब जानता है और वो किसी की सिफारिश नहीं कर सकते मगर हाँ जिसके लिए उसकी मर्जी हो और वो उसके डर से कांपते रहते हैं, और उनमें जो ये कहे कि उसके सिवा मैं इबादत के लायक हूँ तो उसको हम जहन्नम की सजा देंगे, हम जालिमों को ऐसे ही सज़ा दिया करते हैं।"*

(अल-अम्बियाः 26-29)

इसी तरह यहूदी व ईसाई और दुनिया की कुछ दूसरी कौमें भी फरिश्तों के सिलसिले में चरमपंथ का शिकार थीं, और उनको खुदाई में शरीक करती थीं, इस्लाम ने खुल कर इसको नकारा, और साफ कर दिया कि ये सब अल्लाह की मख़लूक (सृष्टि) हैं, बंदगी सिर्फ उसी एक माबूद (इबादत के लायक) की होगी, नीचे की आयतों में इसी को साफ साफ बयां किया गया हैः—

अनुवादः— *"और न वो तुम से ये कहेगा कि फरिश्तों*

और पैगम्बरों को रब बना लो, क्या वो तुम्हें मुसलमान

यौमे जमहूरिया

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0

(पद्य)

जनवरी छब्बीस है यह यौम है जमहूर का
है अहम यह दिन बहुत यह यौम है दस्तूर का
हक़ दिया हमने यहाँ हर एक को दस्तूर में
इन्स क्या हैवान भी महफूज़ हैं दस्तूर में
हिन्दू मुस्लिम सिख यहाँ दस्तूर में आज़ाद हैं
और मसीही भी यहाँ दस्तूर में आज़ाद हैं
हैं सक़ाफ़त याँ बहुत और ज़बाने बेशुमार
हैं ब्रह्मण छत्रीय और वैश्य और कोरी चमार
सब को इज़्ज़त और हक़ याँ है दिया दस्तूर ने
राय दी जनता ने तो मनसब दिया दस्तूर ने
हैं मगर रहती यहां कुछ ज़ालिमों की टोलियां
जिनके हाथों से उड़ीं दस्तूर की हैं धज्जियाँ
क़त्लो ग़ारत काम उनका सेवा उनका लूट का
चाल वह ऐसी चलें कि फ़ैसला हो छूट का
लूट लें गुजरात को और फूँक दें आसाम को
लग सका न दाग़ फिर भी उनके ऊँचे नाम को
फिर भी हिम्मत रखते हैं हम इन बुरे अय्याम में
वह हैं करते काम अपना हम हैं अपने काम में
हक़ पे रहना हक़ पे चलना बस हमारा काम है
हक़ को जिसने पीठ दी उसका बुरा अन्जाम है

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

अल बैरूनी की किताब अल–हिन्द निष्पक्षता का एक उदाहरणः–

अल बैरूनी की सभी किताबों में हिन्दुस्तान और उससे बाहर भी किताबुल हिन्द को बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई जो अरबी भाषा में लिखी गयी थी। उसका पूरा नाम ''तहक़ीकू मा लिल हिन्द मिन मकूलतिन मक़बूलतिन फिल अक़्ल अव मरजूलः'' है। इसमें हिन्दुओं के धार्मिक विश्वासों जैसे आत्माओं की दशा, आवागमन, मिलने की जगहें और बदला मिलने की जगहें, मन्सूबात अर्थात विशेष मूर्तियाँ जो विशेष स्थानों में स्थापित की गयीं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्व वेद। पुराण, हिन्दुओं की दूसरी धार्मिक किताबें, उनके व्याकरण का ज्ञान, छन्द विद्या, मात्रा, दोहे, छन्द, पाँच पक्तियों की कविताएं (मुक्तक), पद, नक्षत्र विद्या, नापतौल के तरीके, लिपियाँ, रीतियाँ, जादू, रसायन, झाड़– फूँक। फिर हिन्दुस्तान के शहरों, नदियों, समुद्रों, द्वीपों, यहाँ के देशों के बीच की दूरियाँ और सीमाएं। फिर सितारों, नक्षत्र, चाँद, सप्तऋषिमण्डल, सप्ताह के दिनों, ब्रह्माण्ड, पृथ्वी, समुद्र की व्यापकता, आसमान, ध्रुव के जन्म की कहानियाँ, ब्रह्मा, कल्प, चार युग, मन्त्रार्थ, नारायण, वासुदेव, भारत, अधिमासा, ओनर, अतर, अहरकन, वर्ष के विश्लेषण से सम्बन्धित हिन्दुओं के विचार, उनकी सामाजिक रीतियाँ, पवित्र स्थलों और तालाब आदि की विस्तृत जानकारी।

हिन्दुओं की नक्षत्र विद्या के अनुसार सितारों का क्रम, चाँद के चरण, सूरज के ग्रहण, समुद्र के पानी पर एक के बाद एक जवार और भाटा का उल्लेख है। फिर हिन्दुओं के विभिन्न वर्गों के सामाजिक जीवन के बारे में विभिन्न पक्षों का चित्रण किया गया है। अन्त में हिन्दुओं की नक्षत्र विद्या, विभिन्न वर्गों के रहन–सहन के विभिन्न आदेशों के नियम और उसके सम्बन्ध में उनकी कार्यविधि का संक्षिप्त विवरण है।

इन सभी विषयों से सम्बन्धित अल बैरूनी को जानकरी उपलब्ध करने में जो परिश्रम करना पड़ा, वह स्वयं अपनी जगह पर एक दिलचस्प विषय है। उसका कहना है कि जब उसने हिन्दुओं की विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया तो उसको तरह–तरह की परेशानियाँ सामने आयीं। इसके लिए संस्कृत भाषा का सीखना बहुत आवश्यक था। लेकिन यह बहुत कठिन काम था क्योंकि उसके कथनानुसार हमारी ज़बान और गले में उनको उनकी वास्तविक आवाज़ों से निकालने की भी योग्यता नहीं है न हमारे कान उसको सुन कर समरूप अक्षरों में अंतर करते हैं और न हमारे हाथ लेखन शैली में उनकी नक़ल कर सकते हैं। इसी कारण से उनकी भाषा की किसी चीज़ को हमारी लिपि में लिख पाना कठिन है। इसके अतिरिक्त उसका कथन है कि उस ज़माने के हिन्दू जो कुछ जानते थे उसको बताने में कंजूसी करते। दूसरी क़ौम वाले तो दूर की बात स्वयं अपनी क़ौम के अयोग्य लोगों से भी जान–बूझ कर छिपाना उनकी प्रकृति में सम्मिलित है। लेकिन

वह उन परेशानियों से बिल्कुल नहीं घबराया। उसने बड़ी मेहनत से संस्कृत भाषा सीखी। फिर अपनी भेद–भाव की आदत न होने और विचार स्वतन्त्रता के कारण पंडितों और ब्राह्मणों से मिल कर उनकी विद्याओं की जानकारी प्राप्त करता रहा और जब वह उनसे अवगत हो कर स्वयं हिन्दुओं को उन सिद्धान्तों को जिन पर उनके आदेशों का आधार था, बताना, उनके कुछ तर्कों की ओर संकेत करना और उनकी गणनाएं सही ढंग से समझना शुरु किया तो वह आश्चर्य करते हुए उसकी तरफ़ लपके। और स्वयं उससे कुछ सीखने के लिए पतिंगों की तरह गिरते और उस हिन्दू विद्वान को पूछते जिससे उसने यह ज्ञान प्राप्त किया है। वह उसको जादूगर कहने लगे और अपने बड़ें लोगों के सामने उसका उल्लेख अपनी भाषा में सिवाय शब्द बहर अर्थात समुद्र के और ऐसे पानी के जो इतना खट्टा हो जाए कि सिरके से भी बढ़ जाए, दूसरे श्ब्द से नहीं करते थे। उसने हिन्दुओं की किताबें एकत्र करने में बहुत अधिक धन ख़र्च किया है और जिन–जिन गुमनाम और छिपे हुए स्थानों में हिन्दू ज्ञानी रहा करते थे, वहां पहुंच कर उनके संग रहा। इस तरह उसके कथनानुसार ठीकरियों में मिले हुए सीप, गोबर में लिपटे हुए मोती और पत्थर के टुकड़ों में पड़े हुए नगीनों को अलग करके अपनी किताब 'किताबुल हिन्द' तैयार की, जिसके बारे में एडवर्ड सखाव का कहना है कि यदि मुसलमान इस पर यह अभिमान कर सकते हैं कि यह अरबी साहित्य के क्षितिज पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण सितारा है। तो हिन्दुओं को भी अपना सौभाग्य मानना चाहिए कि एक सच्चे और उच्च श्रेणी के विद्वान ने उनके पूर्वजों की संस्कृति का एक चित्र बना कर छोड़ा है। उसने जो कुछ विवरण दिया है, उसके कुछ हिस्सों से हिन्दू सहमत न हों, उसकी कुछ आलोचनाओं से उनको उलझन भी पैदा हो सकती है। लेकिन इसके साथ वह मानेंगे कि उसने जो कुछ लिखा है उसमें महत्वपूर्ण सच्चाई की जड़ तक पहुँचने की कोशिश की और इस बात की हिन्दू भी अनदेखी नहीं कर सकते हैं कि उसने जगह–जगह उनकी सभ्यता की प्रशंसा बिना शर्त की है। प्रोफ़ेसर सुनिती कुमार चटर्जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय, ने लिखा है कि अल बैरूनी बाहरी लोगों में पहला व्यक्ति है जिसने हिन्दुस्तान की विद्या और कला को सीख कर बड़ी ख्याति प्राप्त की और अब भी उसकी गिनती भारतीय विद्याओं और विद्याओं के जानने वालों की पहली पंक्ति में किए जाने योग्य है। उसकी विद्या में बड़ी व्यापकता और सच्चाई थी। फिर उदारता और तथ्यपरकता भी थी, इसके अनुसार वह मानवता के उन नायकों में से है जो मनन और चिन्तन पर प्रभावित हुए। अल्लामा शिब्ली लिखते हैं कि यह किताब वास्तव में संस्कृति विद्याओं और कलाओं का बहुत सुन्दर निचोड़ है। लेखक ने संस्कृत की बहुत सी प्रामाणिक और प्राचीन किताबों से ज्ञान का भण्डार उपलब्ध किया है। वह यह भी लिखते हैं कि जब अबू रैहान बैरूनी ने हिन्दुस्तान की यात्रा करके वहां की विद्याओं और कलाओं और रीति रिवाजों पर किताब लिखी तो पिछली सभी किताबें बच्चों का खिलौना बन गयीं।

मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी लिखते हैं कि जब हिन्दुस्तान की ज़मीन सुल्तान महमूद के हमलों से उलट–पुलट हो रही थी। ठीक उसी

समय विद्या और कला का दूसरा सुल्तान अकेले बहुत शान्तिपूर्वक और चैन से हिन्दुस्तान की बौद्धिक विजय में व्यस्त था। इसी राजनैतिक युद्ध और उठापटक पर दिल ही दिल में जल रहा था। उसने किताबुल हिन्द लिख कर जैसा कि डॉ0 ज़खाब ने कहा है कि एक तरफ़ यदि मुसलमानों को यह अभिमान था कि उनके एक व्यक्ति ने एक ऐसी किताब लिखी जिसने यूनानी दूतों और चीनी यात्रियों के भारत से सम्बन्धित कथनों को पुराना कैलेण्डर बना दिया, दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान पर यह उपकार किया कि उसकी प्राचीन संस्कृति, पुरानी विद्याओं और पुराने विचारों को संसार में बाकी रखा।

इस किताब का हर अध्याय जानकारियों से भरा हुआ भी है और दिलचस्प भी और जो कुछ अल बैरूनी लिखता है, उसके प्रमाण में हवाले भी देता है, पतंजलि, गीता, वैष्णव धर्म, पुराण, आदिति, पुराण, विष्णु पुराण, महाभारत, ब्रह्मा सिद्धान्त आदि जैसी किताबों के हवाले बार–बार आते हैं जिससे अनुमान होता है कि उसने उनका गहरा अध्ययन किया। उस ज़माने के हिन्दुओं के धार्मिक, बौद्धिक और सामाजिक दशा के साथ जगह जगह इस देश से सम्बन्धित उसने जो भौगोलिक जानकारियाँ दी हैं। वह सब की सब रुचि के साथ अध्ययन के योग्य हैं, इस लेख में इन सबको समेटना संभव नहीं, इसलिए हम इसकी मुख्य–मुख्य बातों का उल्लेख करने ही को काफी समझते हैं।

ईश्वर की हस्ती और गुणों से सम्बन्धित हिन्दुओं के विश्वासों का अध्ययनः–

हिन्दुओं के धार्मिक विश्वास जैसे हिन्द पुराण, महाभारत, हिन्दुओं की दूसरी धार्मिक किताबें, उनके व्याकरण, छन्द विद्या, भले कर्मों, त्रिपद, चौपाए, पंचपद, नक्षत्र, रीति, व्यवहार, जादू, झाड–फूंक, ब्रह्मा कलप, नारायण, वासुदेव और उनके पवित्र स्थलों और तालाब आदि पर अपनी किताब में ऐसी जानकारी उपलब्ध करायी है जिनसे आज भी बड़े–बड़े पंडित लाभान्वित हो सकते हैं। इन सभी चीज़ों का अध्ययन कटुता, द्वेष और विरोध की नीयत से नहीं बल्कि संवेदना, शोध और तत्यपरक ढंग से की गयी है। यह पातंजलि, गीता और सामक के अध्ययन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि ईश्वर के वजूद और गुणों के सम्बन्ध में हिन्दुओं का विश्वास यह है कि वह अकेला है, सदैव से है, जिसका ना आदि है और न अन्त है, अपने कर्मों में स्वतन्त्र है। क्षमता रखने वाला है, विवेकशील है, जीवित है, जीवित रहने वाला है, युक्ति वाला है, शेष रहने वाला है, वह अकेला राजा है जिसका कोई समतुल्य नहीं है, न वह किसी चीज़ से उपमा देने योग्य है और न कोई चीज़ उसके बराबर है। यह लिखता है कि किताब गीता में वासुदेव और अर्जुन के आपसी बात–चीत में जो किताब महाभारत का एक हिस्सा है, वासुदेव ने कहा है, ''निस्सन्देह मैं वह समग्र हूँ जिसकी न जन्म से उद्भव है और न मौत से अन्त, मेरा उद्देश्य अपने कर्म का बदला लेना नहीं और न मैं प्रेम या शत्रुता के आधार पर एक वर्ग के मुकाबले दूसरे वर्ग के साथ कोई विशेषता रखता हूँ। मैंने अपनी हर एक सृष्टि को वह चीज़ जिसकी वह अपने कर्म में आवश्यकता रखता है, दे रखी है। अतः जो व्यक्ति मुझको इस गुण के साथ पहचानता है और इच्छाओं को कर्म से दूर रखने में मेरे जैसा बनता है उसके बन्धन खुल जाते हैं और उसको मुक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त हो जाती है।

शेष पृष्ठ ...20... पर.

मुस्लिम दुनिया में उच्च शिक्षा का बढ़ता रूझान एक सकारात्मक बदलाव की दस्तक

डॉ0 मुहम्मद इक़्तिदार हुसैन फ़ारूक़ी

शिक्षा किसी भी देश के विकास में बुनियादी अहमियत रखती है और उच्च शिक्षा ग़रीबी के ख़त्म करने, ख़ुशहाली लाने और समाज को अपने समय के चैलेंजों का सामना करने के लिए ताक़तवर बनाने का हथियार है। मध्य युग में जो इस्लामी इतिहास का सुनहरा दौर था, मुस्लिम उम्मत को इस बुनियादी सच्चाई की गहरी समझ थी। शिक्षा हासिल करना मुसलमानों के लिए एक ताकीदी हुक्म है जिसकी वे तक़रीबन 800 वर्षों तक पाबन्दी करते रहे थे।

पिछली 4 सदियों के दौरान दुनिया भर में मुसलमानों ने शिक्षा को छोड़ कर ज़िन्दगी के हर शोबे में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी दिखाई। इस्लामी दुनिया में शायरी, म्यूजिक, चित्रकला, बर्तन बनाने (सेरा मिक्स), भवन निर्माण, मेटल वर्क्स आदि अहम सरगर्मियां बन गईं, लेकिन यूरोप से आने वाली तेज़ी से बढ़ती शिक्षा में बहुत कम दिलचस्पी ज़ाहिर की गई। 15वीं सदी में जो यूरोप के लिए एक क्रांतिकारी बदलाव का दौर रहा है, उम्मत के लिए ग़ालिबन सबसे नुक़्सानदेह काम प्रिंटिंग प्रेस के इस्तेमाल की इजाज़त देने से इन्कार था, जबकि छापाख़ानों के ज़रिये यूरोप में साइंसी और इंडस्ट्रीयल सरगर्मी के विकास में शिक्षा क्रांति को मुम्किन बनाया गया।

लम्बे समय तक सोए रहने के बाद दुनिया भर के मुसलमानों ने यह समझना शुरु किया कि उच्च शिक्षा के बिना वे पश्चिम की ओर से अपने शोषण पर रोक नहीं लगा सकते। यही वह बात थी जो सर सय्यद अहमद खान ने 19वीं सदी के आख़िर में मुस्लिम उम्मत से कही थी। ख़ुशनसीबी से हालिया अतीत के दौरान यानी इक्कीसवीं सदी में मुस्लिम दुनिया में शिक्षा का नए सिरे से उदय हुआ है।

जान मिलर के सर्वे के मुताबिक़ 5 मुस्लिम देश यानी आज़रबाइजान, ताजिकस्तान, कज़ाकिस्तान, तुर्कमानिस्तान और उज़बेकिस्तान उन–25 देशों में शामिल हैं जिनकी शिक्षा दर 100 फ़ीसद है। वर्ल्ड बैंक और यूनेस्को के आँकड़े से पता चलता है कि 25 मुस्लिम अक्सरियती देशों की औसत शिक्षा दर 90 फ़ीसद है जिनमें सऊदी अरब 95%, इंडोनेशिया 94%, मलेशिया 94%, ईरान 90%, जार्डन 96%, यूएई 94%, और तुर्की 95 % शामिल हैं नौ देशों सीरिया 86, ट्यूनिस 82, इराक़ 79, मिस्र 75, अल्जीरिया 73 और मोरक्को 72 सहित 70 से 89 के बीच में हैं। बदक़िस्मती से बंगलादेश, पाकिस्तान और नाईजीरिया सहित बड़ी आबादी वाले 15 देश अब भी शिक्षा दर में पीछे हैं जहां यह 62 फ़ीसद से कम है। फिर भी 1980 की शिक्षा दर के आंकड़े औसतन 30% के मुकाबले में 2018 का डेटा काफ़ी संतोषजनक है। विश्व शिक्षा दर (2017) 82 फ़ीसद (मर्द 87 फ़ीसद और औरतें 77 फ़ीसद हैं)। एक खास बात ये है कि बहुत से इस्लामी देशों में शिक्षा में लैंगिक अंतर (महिला–पुरुष अनुपात) में तेज़ी से कमी आई है। कम से कम 21

देशों में यह अंतर 0–7 फ़ीसद के बीच है। इस्लामी दुनिया में सभी विभागों में उच्च शिक्षा पर गंभीरता पूर्वक ध्यान देने की ज़रूरत है। हाँ, यह सच है कि मुस्लिम दुनिया में साइंसी बेदारी जारी है। बहुत से देश, जैसे सऊदी अरब, ईरान, क़तर, तुर्की आदि में रिसर्च पर बजट में काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है।

पश्चिमी देशों में उच्च शिक्षा आमतौर पर 40 फ़ीसद से ऊपर है, जबकि कुछ देश जैसे तुर्की, सऊदी अरब और इंडोनेशिया को छोड़ कर जहां यह दर 2 से 6 फ़ीसद के बीच है। मुस्लिम देश में रिसर्च पर बजट पर भी गंभीरता पूर्वक ध्यान देने की ज़रूरत है। सिर्फ़ कुछ देशों जैसे तुर्की, सऊदी अरब, ईरान और क़तर ने इस मक़सद के लिए उचित रक़म इकट्ठा की है। बताया जाता है कि क़तर ने साइंस के बजट को अपने जीडीपी के 0.8 फ़ीसद से बढ़ा कर 2.8 फ़ीसद करने का सुझाव दिया है।

बहुत से मुस्लिम देश पहले ही आधुनिक शिक्षा पर ज़ोर देते हुए उच्च शिक्षा के केन्द्र (यूनीवर्सिटियां) क़ायम कर चुके हैं। टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनीवर्सिटी रैंकिंग 2018 के मुताबिक़, मुस्लिम देशों की 56 यूनीवर्सिटियों को दुनिया की 1102 (यूनीवर्सिटियों में शामिल किया गया है जिनमें से 22 का ताल्लुक़ तुर्की से है और उसके बाद ईरान 18, पाकिस्तान 10, मलेशिया और मिस्र 9 सऊदी अरब, यूएई और इंडोनेशि 4, जार्डन और मोरक्को 3 ट्यूनीशिया 2 और अल्जीरिया, बंगलादेश, कुवैत, लेबनान, नाइजीरिया, उमान और क़तर की एक–एक यूनीवर्सिटी शामिल है। रैंकिंग की एक और ख़ास बात यह है कि 41 यूनीवर्सिटियों में छात्राओं की संख्या छात्रों की संख्या से ज़्यादा है। 11 यूनीवर्सिटियों में छात्र और छात्राओं का अनुपात 65:35 से ज़्यादा है। सऊदी अरब की इमाम अब्दुर्रहमान बिन फ़ैसल यूनीवर्सिटी में 22,257 छात्राएं शिक्षा ले रही हैं जहां ये अनुपात सबसे ज़्यादा 81:19 है। इसके बाद यूएई यूनीवर्सिटी 7,492 छात्राओं 79:21 के साथ दूसरे मुक़ाम पर है। इसके बाद क़तर यूनीवर्सिटी 13,342 छात्राओं 73:27 और कुवैत यूनीवर्सिटी 37,752 छात्राओं 72:28 के अनुपात के साथ तीसरे और चौथे मक़ाम पर है।

◆◇◆

पृष्ठ ..18... का शेष...

ईश्वर के सम्बन्ध में हिन्दुओं का जो विश्वास है उसके सम्बन्ध में अल बैरूनी ने यह लिख कर स्पष्ट किया है, उनके दृष्टिकोण में वह निरपेक्ष है, उदार है, देता है लेकिन लेता नही, उसी की एकता को शुद्ध एकता समझते हैं, इसलिए कि उसके अतिरिक्त किसी की एकता किसी न किसी हैसियत से अनेकता रखती है। उसके अस्तित्व को वह वास्तविक समझते हैं, इसलिए कि दूसरी अस्तित्व वाली चीज़ों के अस्तित्व का कारण और सहारा वह है और यह अंधविश्वास की समस्त अस्तित्व वाली चीज़ें माया हैं और वह मौजूद है, जटिल नहीं है और यह अंधविश्वास कि वह मौजूद नहीं है और सब वस्तुएं मौजूद हैं, जटिल है। वह इस निष्कर्ष पर भी पहुंचा था कि हिन्दुओं के कुलीन वर्ग और जनता के धार्मिक विश्वासों में अन्तर है। लेकिन हिन्दू जनता के भोंडे विश्वासों को हेय दृष्टि से देखने के बजाए उप पर यह लिख कर पर्दा डालने की कोशिश करता है कि इस तरह के विश्वास दूसरे धर्मों में भी हैं। बल्कि इस्लाम में भी उपमा, ज़बरदस्ती और किसी चीज़ में चिन्तन आदि के कथन मौजूद हैं जिनका सुधार अनिवार्य है।

.....जारी.....

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः इंटरनेट, वेब साइट, फैक्स, ई—मेल, टेलीफोन कान्फ्रेंसिंग और टेलीग्राम पर निकाह करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः निकाह की शर्तों में एक शर्त यह है ईजाब—कबूल एक ही बैठक में हो, इसलिए इन साइट्स पर निकाह करने से शरअन निकाह नहीं होगा, उसके दुरुस्त होने की सूरत यही है कि किसी को निकाह के स्वीकार करने का वकील बनाया जाए और वह अपने मुवक्किल का निकाह करे, अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रह0 ने निकाह के दुरुस्त होने के लिए इस सूरत को जायज़ करार दिया है। (रद्दुल मोहतार 3/63)

प्रश्नः निकाह के समय लड़की से इजाज़त कौन ले? आमतौर पर देखा जाता है कि निकाह पढ़ाने वाले क़ाज़ी स्वयं दो गवाहों के साथ लड़की के पास इजाज़त के लिए जाते हैं जब कि वहां औरतों की भीड़ होती है और क़ाज़ी के लिए यह काम आज़माईश का होता है, क्या क़ाज़ी ही के लिए इजाज़त लेना ज़रूरी है?

उत्तरः लड़की से इजाज़त लेने के लिए क़ाज़ी का लड़की के पास जाना ज़रूरी नहीं, चाहिए कि लड़की के वालिद स्वयं अपने दो महरम रिश्तेदारों के साथ जायें और इजाज़त ले लें, यह पसंदीदा अमल है, क़ाज़ी अगर गैर महरम हो तो उसका जाना मुनासिब नहीं है, ऐसे मौक़े पर वहां से गैर महरम औरतों को हट जाना चाहिए, और बेपर्दगी से बचना चाहिए चूंकि पर्दे के अहकाम शरीयत में सख्त हैं, उनका लेहाज़ ज़रूरी है।

प्रश्नः निकाह पढ़ाना लड़के वाले का हक है या लड़की वालों का? अगर दोनों पक्ष अपने अपने क़ाज़ी से निकाह पढ़वाने पर अड़िग हों तो तरजीह किसको दी जायेगी?

उत्तरः निकाह का क़ाज़ी, लड़की का वकील होता है, लड़की और लड़की वालों ही को अख्तियार होता है कि जिसे चाहें निकाह का वकील मुतअय्यन करें, असहमती की सूरत में लड़की के क़ाज़ी को तरजीह एवं वरीयता हासिल होगी।

(निजामुल फतावा 3/68)

प्रश्नः आज कल होटलों, ट्रेनों, हवाई जहाजों के नानवेज खानों में मुर्ग का गोश्त मिलता है उनके बारे में कोई तहक़ीक नहीं होती कि क्या यह जानवर हलाल तरीक़े पर ज़ब्ह हुए हैं या नहीं? इस सूरत में इनका खाना कैसा है?

उत्तरः जिस भी गोश्त के हलाल होने में शक हो, उससे परहेज़ करना चाहिए, हदीस शरीफ में है कि शक में डालने वाली चीज़ को छोड़ कर ऐसी चीज़ को अख्तियार करो, जो शक में न डाले।

(तिर्मिज़ी 2/78)

प्रश्नः एक व्यक्ति ने अपनी बीमारी की हालत में अपनी जायदाद और मकान से मुतअल्लिक़ एक इक़रार नामा लिखवा कर अदालत में रजिस्ट्री करवा दिया है, मक़सद यह है कि लड़कियों को इससे बेदखल कर दिया जाय, क्या इन जायदादों और मकान से लड़कियाँ महरूम हो जायेंगी?

उत्तरः लास्ट स्टेज की बीमारी में लिखाया हुआ इक़रार नामा या हिबा नामा वसीयत के हुक्म

में होता है और वसीयत वारिस के हक में लागू नहीं होती है जब तक कि दूसरे वारसीन सहमति और इजाज़त न दें, इसलिए ऐसी सूरत में यह इक़रार नामा या हिबा नामा शरअन ना काबिले अमल है और इसमें इस्लामी शरीयत के मुताबिक मीरास जारी होगी और लड़कियों का भी उसमें हक होगा।

(अल दुर्रुल मुखतार 8/493)

प्रश्नः एक व्यक्ति की बीवी ने कुछ प्लाट्स और पॉलिसियाँ ली थीं और अपने लड़के और लड़की के नाम रजिस्ट्री करा दी थी, अब इस औरत का देहांत हो गया है, सवाल यह है कि क्या यह ज़मीनें और पॉलिसियाँ सिर्फ इन्हीं लड़कों और लड़कियों की होंगी या उनके अलावा दूसरे वारसीन मसलन मरहूमा के शौहर और भाई वगैरह भी हिस्सा पायेंगी?

उत्तरः मृतिका ने अगर उन लड़कों और लड़कियों के नाम ज़मीनों की रजिस्ट्री मालिक बनाने के लिए की थी तो उसकी हैसियत ''हिबा'' की है, और यह लोग उन ज़मीनों और पॉलिसीयों के मालिक हैं, दूसरे वारिसीन का उसमें हक नहीं होगा, और अगर किसी क़ानूनी ज़रूरत के तहत रजिस्ट्री कराई थी तो यह माल भी मृतिका दूसरे छोड़े हुए माल में शामिल होगा और तमाम वारसीन मृतिका के शौहर समेत सब हकदार होंगे।

(सही बुखारी 2/272)

प्रश्नः बाज लोगों को सीने, पैर, पीठ, और दूसरी जगहों पर बाल होते हैं और इस क़दर ज़्यादा होते हैं कि उलझन होती है क्या यह बाल साफ़ किये जा सकते हैं?

उत्तरः सर, चेहरा, मूँछ, नाक, बग़ल, और गुप्तांगों के बालों की सफ़ाई या कमी करना सुन्नत है और हफ़्ते में एक बार मुस्तहब व पसंदीदा है, लेकिन सीना, पेट, पीठ या रानों के बाल साफ़ करने को फ़िक़्ह के बड़े आलिमों ने अदब के खिलाफ़ लिखा है, यानी ज़रूरत हो तो साफ़ करने की गुंजाइश है वरना बिला ज़रूरत अच्छा नहीं।

(मुस्लिम शरीफ–258)

प्रश्नः गर्दन के जो बाल कानों की लौ के नीचे होते हैं, उनको काटना शरअन दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः भवों के बाल अगर ज़्यादा लंबे और घने हो जायें जिससे चेहरा बदनुमा महसूस हो तो उन बालों को काटना सही है, इस सूरत में यह ऐब का दूर करना हुआ, जिसकी इस्लामी शरीयत में इजाज़त है, और हाँ बिला ज़रूरत काटना और बारीक करना जैसा कि मौजूदा दौर में एक फैशन हो गया है, दुरुस्त नहीं, हदीस नबवी में इससे रोका गया है, इमाम अबू दाऊद रह0 ने हदीस नक़ल करने के बाद ''अल–नामिसा'' शब्द की व्याख्या की है कि ''नामिसा'' उस औरत को कहते हैं जो भवों को बारीक करती है।

(सुनन अबू दाऊद 2/218)

प्रश्नः लड़के और लड़की ने अपने वालिदैन को बताए बगैर ''कोर्ट मैरेज'' कर ली, वहां सिर्फ एक फार्म भरा गया और दोनों ने अपने अपने कालम पर दस्तखत कर दिए, यह निकाह हुआ या नहीं?

उत्तरः इस्लामी शरीअ़त में निकाह सही होने के लिए फरीकैन के अलावा दो मुसलमान गवाहों का होना निकाह के वक्त शर्त है, अगर वहां दो मुसलमान गवाह ईजाब व क़बूल के वक्त मौजूद थे तो निकाह हो गया वरना नहीं।

(रद्दुल मुहतारः 2/262)

❖❖❖

मुस्लिम समाज की बुनियादी ख़राबियाँ

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह0)

इस्लाम की बहुत सी बुनियादी चीज़ें ऐसी हैं, जिनका जायज़ा लेने के बाद यह एहसास होता है कि अब मुसलमानों में वह चीज़ें बहुत कमज़ोर होती जा रही हैं, जबकि दीन–ए–इस्लाम में उनकी हैसियत रीढ़ की हड्डी जैसी है। दीन का जो ढाँचा अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हमें दिया है, वह चीज़ें उसकी रीढ़ की हड्डी हैं। लेकिन अफ़सोस की बात है कि मुसलमानों का उनकी ओर ध्यान न देना आम होता जा रहा है, और यही वजह है कि आज देखने में दीन का काम बढ़ रहा है लेकिन वास्तव में घट रहा है। अगर जायज़ा लिया जाए तो पता चलेगा कि हमने दीन का हुलिया बिगाड़ दिया है और दीन को सही तौर पर समझा ही नहीं है। जिसके नतीजे में दीन का जो असर हमारे पड़ोसियों पर पड़ना चाहिए, उसका कहीं नाम व निशान नहीं है। बस यह हाल है कि न अन्दर की हालत पूछने लायक़ है और न बाहर की।

दीन की जो अहम चीज़ें हमारे समाज से ओझल होती चली जा रही हैं, उनमें बुनियादी चीज़ें निम्नलिखित में देखिएः–

दीन–ए–इस्लाम में तौहीद का अक़ीदा (एकेश्वरवाद की आस्था) बिल्कुल बुनियादी चीज़ है। लेकिन तौहीद के अक़ीदे को लोगों ने बहुत आसान समझ लिया है और वह इस धोखे में हैं कि हम तो मोमिन हैं, हमको अक़ीदे की क्या ज़रूरत है? अस्ल में यब हुत बड़ा धोखा है, हर वक़्त व्यक्ति को अपने ईमान और अपने अक़ीदे की फ़िक्र होनी चाहिए, इसलिए कि यह बात तो सब लोग जानते ही हैं कि अगर किसी के पास सोना हो, और उसने उसे अपने घर में किसी जगह रखा हो, तो वह बराबर चेक करता रहता है कि सोना सुरक्षित है या नहीं? बल्कि बहुत से एहतियात पसंद लोग तो अपना क़ीमती सामान बैंक के लॉकर में रखवा देते हैं और चेक भी करते रहते हैं कि ठीक से रखा है या नहीं? इसलिए कि दुनिया में जिस तरह सोने का बहुत महत्व है, उससे कहीं, ज़ियादा दीन में तौहीद के अक़ीदे का महत्व है। लेकिन आज हमारे दिलों में ईमान व अक़ीदे की अहमियत नहीं है, इसलिए कि हमें पुश्तैनी तौर पर यह दौलत मिल गयी है, लिहाज़ा इस बारे में किसी को चिन्ता नहीं कि उसके पास तौहीद का अक़ीदा बाक़ी है या नहीं? इसलिए कि यह भी हक़ीक़त है कि आजकल ईमान और अक़ीदे के चोर और डाकू बहुत हैं।

वर्तमान समय में ईमान व अक़ीदे के ऐसे डाकू और चोर हैं कि अगर आपने ईमान की ज़रा सी हिफ़ाज़त करनी छोड़ दी तो आपकी यह क़ीमती दौलत लुट जायेगी और उस क़ीमती माल की जगह भेष बदल कर कुछ और आपके पास आ जाएगा इसलिए कि आजकल जो चोर और ठग हैं वह नये–नये अंदाज़ से आते हैं। अतः यह संभव नहीं है कि आप उनका सामना भी कर सकें। एक साहब ने एक इलाक़े का हाल बताया कि वहां

कोई बाबा आ गए, और उन्होंने कहा कि जिसके औलाद न होती हो वह फ़ौरन मेरे पास आ जाए और औलाद की दौलत से मालामाल हो जाए। ज़ाहिर है कि आजकल अक़ीदा सब ही का कमज़ोर है। इसीलिए यहां भी वही हुआ और सब लोग उसके पास भागे चले गए और फिर उसने सबको क़ायदे से ठगी, लोगों से रूपए ऐंठ लिए, फिर वहां पन्द्रह–बीस दिन ठहरा और किसी को कुछ दे गया और किसी को कुछ दे गया और किसी से कहा कि छः महीने में फ़ायदा होगा और लाखों रूपये ले कर फ़रार हो गया। अब ज़ाहिर है कि अगर वहां के मुसलमानों का अक़ीदा मज़बूत होता तो ऐसी लूट से बच जाते, इसलिए कि औलाद का होना न होना अल्लाह के हाथ में है।

आज हर एक का अक़ीदा अन्दर से कमज़ोर हो गया है। इसीलिए सब इधर–उधर भागे चले जा रहे हैं। अगर हमारा अक़ीदा मज़बूत होता तो लोग कहीं न जाते, बल्कि अपने रब के सामने हाथ फैला कर दुआ करते और काम बन जाता। लेकिन चूंकि अक़ीदा कमज़ोर है, इस वजह से हम भागे–भागे फिरते हैं। और ज़ाहिर सी बात है कि जब हमारा अक़ीद–ए–तौहीद कमज़ोर हो गया तो हमारे यहां मुश्रिकों वाले काम, मुश्रिकों वाली बातें और उनकी सोच दाख़िल हो जाएगी। अगर हम मुस्लिम समाज को देखें तो हमें नज़र आएगा कि कोई मुश्रिकों वाली बात कह रहा है, कोई उनके जैसा काम कर रहा है, कोई उनके जैसी सोच में पड़ा हुआ है।

मुश्रिक (बहुदेववादी) के बारे में कुरआन मजीद में साफ़ ऐलान है किः ''बेशक अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और उसके अलावा जिसको चाहता है माफ़ कर देता है।''

पता चला कि यह ऐसा गुनाह है कि इसमें यह बात बिल्कुल नहीं चलेगी कि फ़लां ने मुझे समझा दिया था या मुझे बिल्कुल ख़्याल नहीं रहा था, अल्लाह साफ़ कहेगा कि हमें पहले अपना अक़ीदा दिखाओ, सही है कि नहीं? अब अगर आप सोचें कि कह देंगे फ़लां बुजुर्ग आए थे और ऐसा–ऐसा बता रहे थे, अतः मैंने उनकी बात मान ली थी। ज़ाहिर है कि ऐसी बातों पर यही कहा जाएगा कि हमने तुमको अक़्ल सिर्फ़ दाल–चावल खाने को दी थी? तुमने हमारी बातों को गंभीरता से क्यों नहीं लिया? हमने साफ़ कह दिया था कि हम मुश्रिक को माफ़ नहीं करेंगे, सारे इन्सानों! सुन लो, हम सारे गुनाह मॉफ कर देंगे, लेकिन शिर्क मॉफ़ नहीं करेंगे। इस साफ़ ऐलान के बाद भी अगर आप कहेंगे कि मैं नहीं जानता था तो क्या कहा जाएगा कि तेरे घर में कुरआन रखा रहा था, तूने कभी क्यों नहीं पढ़ा। वहां कोई भी वजह काम न आएगी। इसलिए ख़ूब समझ लें कि कभी किसी के कहने–सुनने में नहीं आना है। तौहीद के अक़ीदे का सौदा किसी सूरत में गवारा नहीं करना है। चाहे तुम्हारे पास कोई कितना ही बड़ा बुजुर्ग चल कर आए, कितना ही बड़ा शेख़ बन कर आए कितना ही बड़ा आलिम बन कर आए।

शिर्क के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐलान है ''मेरी शफ़ाअत का हक़दार वही शख़्स है, जो अल्लाह तआला के साथ ज़रा सा भी शिर्क न करता हो।''

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुर्आन मजीद के साफ़ ऐलान के बाद बहाने बनाने का हर दरवाज़ा बन्द हो गया है। हदीस में साफ़ कह दिया गया है कि उसी की सिफ़ारिश करूँगा जो शिर्क न करे। इससे पता चला कि मुश्रिक को रसूलुल्लाह सल्ल0 की सिफ़ारिश भी नसीब नहीं होगी, चाहे वह मामूली दर्जे का मुश्रिक हो। इसलिए हमको शिर्क से बचने की बहुत ज़रूरत है। मुश्रिक के अच्छे काम भी कुबूल न होने की मिसाल ऐसे ही है, जैसे कि हम में से किसी व्यक्ति का खाता बैंक में न हो तो वह बैंक में रक़म जमा नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह जिसके अन्दर शिर्क पाया जाता है तो वह चाहे कितने ही अच्छे काम करे, उसको कोई फ़ायदा नहीं मिलेगा।

दूसरी चीज़ जो मुस्लिम समाज में बहुत कमज़ोर हो चुकी है वह है इख़्लास (नेक नियत) की कमी। आज हमारे यहां से इख़्लास भी ख़त्म होता जा रहा है। आज हमारी यह हालत है कि हम जो भी काम करते हैं, उसको या तो बुरी नियत से करते हैं या बेनियत होते हैं। कोई भलाई का काम है तो हम बहुत अच्छे तरीक़े से कर रहे हैं, लेकिन होता यह है कि उसमें नियत ही नहीं होती। जबकि हदीस से मालूम होता है कि जो काम बिना नियत के हो वह कुबूल नहीं। इसलिए कि अल्लाह के यहां ख़ालिस काम कुबूल होता है, यानि मिलावट नहीं चलती और हम लोग यह समझते हैं कि जैसे यहां मिलावट करके हमारा काम चल जाएगा, खुदा के यहां भी मिलावट चल जाएगी, ऐसा नहीं है। जब आप दुनिया में मशीनों से पता कर लेते हैं कि दूध में कितना दूध है और कितना पानी, तो अल्लाह तआला से क्या चीज़ छिपी रह सकती है। उसकी मशीनें पूरी क़ायनात में लगी हुई हैं। जो कुछ दुनिया में हो रहा है वहां सब कुछ रिकार्ड हो रहा है और चेक भी हो रहा है कि किसका काम कितना ख़ालिस है और कितना मिलावट वाला है। यही वजह है कि आज कामों में असर ख़त्म होता जा रहा है और ऐसा लगता है कि अब भलाई के कामों में असर नहीं रहा। इसलिए कि वाक़्या यह है कि अल्लाह तआला के लिए काम ही नहीं हो रहा है, बल्कि सब लोग अपने लिए काम कर रहे हैं।

तीसरी चीज़ जो बहुत कमज़ोर हो चुकी है, वह है ख़िदमत का जज़्बा अर्थात सेवा भाव। इस समय मुसलमानों में यह जज़्बा भी ख़त्म हो गया है। यहां तक कि हमारे दीनदार वर्ग से भी यह जज़्बा रुख़्सत हो चुका है। ज़ाहिर है कि जब दीनदार तबके का हाल यह है तो बद्दीन तबक़े का हाल यक़ीनन और बुरा होगा। आज हमारे दीन दार तबक़े वाले जो बड़े–बड़े अफ़सर हैं, उनके बेटे जो बड़े–बड़े डिग्री होल्डर हैं और बाहर कमा रहे हैं, और वहां इत्मिनान के साथ रह रहे हैं। उनके पिता यहां राज़ी हैं और वे वहां ख़ुश हैं कि हम यहां हैं। बेचारे दो बूढ़े माँ–बाप यहां पड़े हुए हैं। सिर्फ़ इसलिए कि ज़्यादा कमाएं इसीलिए माता–पिता की सेवा को ताक़ पर रख दिया है, जबकि मालूम होना चाहिए कि ख़िदमत से जन्नत मिलती है। कहा गया है कि जब माँ–बाप बूढ़े हो जाएं तो उनको उफ़ भी न कहो, लेकिन यहाँ हाल बिल्कुल उल्टा है।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

मौलिक अधिकार और मूल कर्तव्य

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

ज्ञात हो कि भारतीय संविधाान में पहले 7 मौलिक अधिकार प्रदान किये गए थे मगर 44वें संवैधानिक संशोधन (1979) के द्वारा सम्पत्ति के अधिकार को मौलिक अधिकार की श्रेणी से निकाल दिया गया। अब सम्पत्ति का अधिकार एक कानूनी अधिकार के रूप में जाना जाता है। संविधान द्वारा भारतीय नागरिकों को अब 6 मौलिक अधिकार प्राप्त हैं:–

(1) समानता का अधिकार
(2) स्वतंत्रता का अधिकार
(3) शोषण के विरुद्ध अधिकार
(4) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
(5) संस्कृत और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (6) संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

1. समानता का अधिकार (Right to Equality) (अनुच्छेद 14–18):–

भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त समानता का अधिकार लोकतंत्र और प्रजातंत्र के लिए आधार स्तम्भ की हैसियत रखता है और इस अधिकार द्वारा देश के सभी नागरिकों को क़ानून के समक्ष समानता, राज्यों और प्रान्तों के अधीन नौकरियाँ तथा रोजगार का समान अवसर एवं सामाजिक समानता प्रदान की गई है और समानता को स्थापित करने के लिए उपाधियों को समाप्त किया गया है।

कानून के समक्ष (अनुच्छेद 14) (Equality before the law):-

अनुच्छेद 14 के अनुसार भारत के राज्य किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष अथवा कानून के समान संरक्षण से वंचित नहीं कर सकते और इस अनुच्छेद द्वारा राज्य पर बन्धन लगाया गया है कि वह सभी नागरिकों के लिए एक सा कानून बनाएगा और उन्हें एक समान लागू करेगा "कानून का समान संरक्षण" का आशय ये है कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिये देश का हर नागरिक समान रूप से कोर्ट जा सकता है।

ध्यान देने योग्य बिन्दु है कि भले ही कानून की नज़र में सब बराबर हैं मगर टैक्स के मामले में ग़रीब अमीर और सुविधाओं के मामले में स्त्री–पुरुष के मध्य भेद करता है और ये भेद समानता का उल्लंघन नहीं माना जायेगा।

धर्म, जाति, वंश, लिंग अथवा जन्म स्थान की बुन्याद पर भेदभाव निषेध (अनुच्छेद 15):–

अनुच्छेद 15 में है कि राज्य के द्वारा धर्म, जाति, लिंग और जन्म स्थान आदि के आधार पर नागरिकों के प्रति जीवन के किसी भी विषय और क्षेत्र में भेदभाव नहीं किया जा सकता है अर्थात कानून द्वारा ये सुनिश्चित किया गया है कि देश के सभी नागरिकों के साथ दुकानों, बाज़ारों, होटलों, सार्वजनिक स्थान जैसे कुओं, तालाबों, नदियों, चट्टी, चौराहों, सड़कों के प्रयोग में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा।

राज्य के अधीन नौकरियों का समान अवसर (अनुच्छेद 16):–

इस अनुच्छेद में कहा गया है कि सभी नागरिकों को सरकारी पदों पर नियुक्त के समान अवसर प्राप्त होंगे और धर्म, जाति, वंश, लिंग, जन्मस्थान आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा, हाँ ये ज़रूर है कि राज्य को ये अधिकार प्राप्त है कि वह राजकीय सेवाओं के लिए ज़रूरी योग्यतायें निर्धारित कर दे, जैसे वह राज्य का निवासी होना ज़रूरी करार दे, इसी प्रकार नौकरी में पिछड़े और वंचित वर्गों के लिए स्थान सुरक्षित कर दे आदि।

अस्पृश्यता का निषेध (अनुच्छेद 17):–

समाज में पाई जाने वाली छुआछूत को समाप्त करने और समानता के आदर्श को और अधिक मज़बूती देने के लिए अस्पृश्यता का निषेध किया गया है। इस अनुच्छेद में कहा गया है कि "अस्पृश्यता का

शेष पृष्ठ..29.. पर...

नदवतुल उलमा और ख़िदमते दीन व मिल्लत

हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

नदवतुल उलमा के काम की विशेषता इस बात में है, कि वो मुसलमान को एक बहुआयामी इन्सान बनाना चाहता हैं, ताकि वो अपने ज़माने के हालात व ज़रूरियात को समझते हुए अपनी सलाहियतों को इसके हल के लिए मुफ़ीद तरीक़े से इस्तेमाल कर सके, और एक मिसाली एंव आदर्श उम्मत की हैसियत से क़ायदाना क़िरदार अन्ज़ाम दे सके।

अलहम्दुलिल्लाह नदवतुल उलमा की कोशिशें इस सिलसिले में मुनासिब ढंग से अन्जाम पा रही हैं, इसके लिए शिक्षा प्रणाली में जो ज़रूरी बदलाव किया जा सकता है, वो बदलाव किया गया है, और इसी के साथ मौजूदा हालात और ज़िन्दगी के मौजूदा तक़ाज़ों को समझने और उनके लिए मुनासिब ढंग से कोशिश करने के लिए मुख़्तलिफ शोबे भी कार्य अन्जाम देते हैं, इस निसाब व निज़ाम ने पहले भी बेशुमार उच्चकोटि के बहुआयामी व्यक्तित्व को तैयार करके अहम कारकर्दगी का सुबूत दिया और उनकी अहमियत को विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया। चुनांचे आज पूरे विश्व के इल्मी हल्क़ों में नदवतुल उलमा का नाम जहाँ आता है, लोग इसकी अहमियत को मानते और उसकी प्रशंसा करते हैं, इनके सामने नदवतुल उलमा से पढ़ कर फारिग़ अहले इल्म हज़रात की इल्मी व अमली ख़िदमात होती हैं।

(प्रस्तुतिः आफ़ताब आलम नदवी ख़ैराबादी)

❖❖❖

दुआए मग़फ़िरत की दरख़्वास्त

● दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ के उस्ताद और अर्द्ध मासिक उर्दू पत्रिका ''तामीरे हयात'' के सम्पादकीय सहायक मौलाना जावेद अख़तर नदवी के वालिद जनाब मुहम्मद महफूज़ुर्रहमान साहब का 65 वर्ष की उम्र में 26 अक्तूबर, 2022 को इन्तिक़ाल हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलाहि राजिऊन''। मरहूम का निवास स्थान अररया बिहार था, मरहूम बहुत ही दीनदार, नेक स्वभाव और बहुत अच्छे आचरण के इंसान थे, जो भी उनसे मिलता प्रभावित अवश्य होता, मरहूम में बड़ी विशेषतायें थीं। सबसे बड़ी विशेषता नमाज़ और मस्जिद से गहरा संबंध था जो उनके जन्नती होने की अलामत थी, मरहूम ने अपने पीछे बेवा के अलावा दो बेटे और तीन बेटियाँ छोड़ीं, अल्लाह सबको सब्र व तसल्ली की तौफीक़ अता फरमाये और मरहूम को जन्नत में आला मुक़ाम अता फ़रमाए, आमीन।

******

● इसी प्रकार एक नदवी आलिम मौलाना मतलूब आलम नदवी, इलाहाबादी के वालिद जनाब क़ारी गुलाम गौस साहब उस्ताद मदरसा अरबिया मदीनतुल उलूम क़ड़ा जिला कौशाम्बी का भी 7 दिसम्बर 2022 को इन्तेक़ाल हो गया, ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलाहि राजिऊन''। मरहूम बड़े दीनदार, नमाज़ रोज़े के पाबंद, खैर के कामों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने वाले इंसान, और एक कामयाब उस्ताद थे, अल्लाह मरहूम की मग़फ़िरत फरमाये और जन्नतुल फिरदौस में आला मक़ाम अता फरमाये।

''सच्चा राही'' अपने समस्त पाठकों से इन मरहूमीन के लिए दुआ–ए–मग़फिरत की दरख्वास्त करता है। ◆◆

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

औरत के जल्दी नाराज़ हो जाने का हदीस में जिक्रः–

औरत के जल्दी नाराज़ होने और जरा सी बात मिज़ाज के खिलाफ पेश आ जाने पर एक दम सारे एहसानों को भुला देने के बारे में तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ही फरमा दिया थाः–

''चाहे तुम औरत के साथ उम्र भर एहसानों से भर पूर, और बेहतर से बेहतर बर्ताव करते रहो, इसके बावजूद इत्तिफाकन अगर उसने किसी वक़्त मामूली सी कोई बात भी अपनी मर्जी के खिलाफ तुम्हारी तरफ से होती देख ली तो बस फौरन कह उठेगी कि मैंने आज तक तेरे यहाँ कोई भलाई देखी ही नहीं (या मुझे तेरे पास सुख मिला ही नहीं)

(बुखारी शरीफ, किताबुल ईमान, पृष्ठ–9, जिल्द– 1)

इन सच्चाइयों और उम्मत के उलमा की बातों का समर्थन, इस दौर के रिसर्च स्कॉलर और पश्चिमी माहिरों के बयानात से भी होता है, यहां इनसाइक्लोपीडिया की एक इबारत पढ़ते चलिए!

''एनाटॉमी के मुताबिक ये सच्चाई साबित हो चुकी है कि मर्द, औरत के मुकाबले हर लेहाज से शारीरिक रूप से बहुत ताक़तवर होता है, इसके बाद मशहूर डॉक्टर ''दूफारीनी'' का ये कथन भी लिखा है कि–

''यह शारीरिक अंतर हर क्षेत्र के मर्द व औरत के दरम्यान होता है। अमेरिका के आदिवासी लोगों, और पेरिस के विकसित और सभ्य लोगों के दरम्यान समान रूप से मौजूद है''। आगे लिखते हैंः– कि ''मनोविज्ञान ने ये साबित कर दिया है कि औरत का दिमाग मर्द के दिमाग से औसत तौर पर एक सौ के बराबर कम होता है। और दिमागी व शारीरिक अनुपात भी कम होता है। यानी मर्द के दिमाग और शरीर में (1/40) का अनुपात होता है और औरत के दिमाग व जिस्म में (1/44) का इसलिए मर्द ज़्यादा चतुर और बुद्धिमान होता है। और एक मनोवैज्ञानिक अंतर भी। प्राकृतिक ऊर्जाओं के फर्क की वजह से। इन दोनों के दरम्यान इसी फर्क की वजह से औरत जल्द प्रभावित हो जाती है और जल्द दुखी होती है, और दोनों का ये फर्क सभ्यता की उन्नति से बराबर बढ़ता जा रहा है।''

(दाइरतुल मआरिफ, फरीद वजदी, पृष्ठः 601–602, जिल्द 8)

और टाइम्स ऑफ इंडिया (प्रकाशित 7 फरवरी 2005) में एक रिसर्च प्रकाशित हुई उसके मुताबिक मर्दों का दिमाग औरतों के दिमाग से चार गुना तेज होता है, इस रिसर्च के मुताबिक मर्दों के दिमाग के सेल्स में संदेशों को भेजने की रफ़्तार महिलाओं की रफ़्तार से चार गुना ज़्यादा होती है । इसका कारण ये बताते हैं कि मर्दों के दिमाग़ी सेल्स पर एक रक्षात्मक पदार्थ ''माइलिन'' की परत महिलाओं की सेल्स के मुकाबले में ज़्यादा मोटी होती है। (कौमी आवाज, नई दिल्ली 22 फरवरी 2005, पृष्ठ–3)

तलाक में मर्द का अधिकार ''मन्सूस'' (कुरआन हदीस की इबारत में मौजूद) है इज्तिहादी नहीं :–

यहां ये साफ़ कर देना भी जरूरी है कि मर्द को तलाक़ का अधिकार दिए जाने का मामला कयासी व इज्तिहादी या इख़्तिलाफी नहीं है, बल्कि ये ''नस्से कतई'' (साफ़–साफ़ इबारत) से साबित और सर्वसम्मत मसला है, क्योंकि कुरआन मजीद के अंदर तलाक़ देने से संबंधित सारी आयतों में इसका करने वाला मर्द ही को करार दिया गया है, जबकि निकाह के बारे में औरत व मर्द दोनों की तरफ़ करने वाला बताया गया है, और सूरह बकरा की आयत से जो बात मालूम हो रही है वही बल्कि और ज़्यादा साफ अंदाज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जबानी भी फरमाई है जैसा कि तफ़्सीर कुर्तुबी में लिखा हुआ है ''निकाह

के रिश्ते को बांधना और खोलना पति के ही हाथ में है। (तफ़्सीर मआ़रिफुल कुरआन, जिल्द 1, पृष्ठ– 588) में तो ये बात बिल्कुल ही साफ़ तरीके पर बता दी गई है कि निकाह का रिश्ता और गिरह पूरे तौर पर मर्द ही के हाथ में है, उसको अधिकार है कि इस गिरह को खोल दे या बांधे रखे इसलिए तलाक पड़ने के बारे में बीवी की रजामंदी जरूरी नहीं, पक्षपात और तरफदारी की ऐनक उतार कर देखा जाए तो सही अक़्ल का भी यही तकाजा नज़र आएगा।

औरत को तलाक का अधिकार न देने की मस्लेहतें:–

मर्द को तलाक़ का अधिकार दिए जाने की कुछ मस्लेहतों का जिक्र मशहूर हनफी फिक़्ह इब्ने हुमाम (रह०) ने भी ''फत्हुल कदीर'' में किया है, फरमाते हैं:–

अनुवाद:– ''तलाक़ का अधिकार सिर्फ मर्द के हाथ में देने के वजहों में से कुछ ये हैं:– ''औरतें ना समझ और जज़्बाती होने की वजह से अधिकारों का गलत इस्तेमाल करने लगती हैं और जल्द फरेब का शिकार हो जाती हैं, और दीनी हैसियत से कमज़ोर होने दुनिया के कामों (बनाव श्रृंगार फैशन) में ज़्यादा (और दूसरों के बहकाने से साजिशों का शिकार हो जाने के साथ वो खुद भी मतलब पूरा करने के लिए तरह तरह की ना मुनासिब) उपाय करने लगती हैं और शौहरों के राजों को भी (सहेलियों में) बयान कर देती हैं।

मर्द का अधिकार निर्बाध नहीं:–

इसके अलावा और भी बहुत सी मस्लेहतें व फायदे हैं, उन सब को जानने से इंसानी अक़्ल असमर्थ है, क्योंकि अल्लाह तआला के कामों की सारी हिकमतें और सब मस्लेहतें इंसान की सीमित अक़्ल में कहाँ समा सकती हैं!

यहाँ ये हक़ीक़त भी ज़रूर सामने रहनी चाहिए कि मर्द को ये अधिकार उसकी पैदाईशी बर्दाश्त और ज़्यादा सूझ बूझ की बिना पर दे तो दिया है, मगर इस हक को इस्तेमाल करने के लिए उस पर बहुत सी पाबंदियाँ भी लगा दी गई हैं, और हर सम्भव इस कदम को उठाने से रोका भी गया है।

.....ज़ारी.....

❖❖❖

पृष्ठ ..26... का शेष

अंत किया जाता है और उसका किसी भी रूप में आचरण निषिद्ध किया जाता है। अस्पृश्यता से उत्पन्न किसी अयोग्यता को लागू करना एक दण्डनीय अपराध होगा''। अस्पृश्यता हिन्दू समाज से समाप्त करने के लिए 1955 में अस्पृश्यता अपराध अधिनियम पारित किया गया जोकि पूरे देश में लागू होता है, इस क़ानून द्वारा अस्पृश्यता को एक दण्डनीय अपराध घोषित किया गया। सन् 1976 ई0 में संशोधित करके अस्पृश्यता अपराध अधिनियम का नाम बदल कर नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम 1955 ई0 कर दिया गया।

उपाधियों का निषेध (अनुच्छेद 18):– अंग्रेजों के शासनकाल में सम्पत्ति आदि की बुनियाद पर उपाधियाँ दी जाती थीं, जिससे सामाजिक जीवन में एक दूसरे के प्रति भेदभाव उत्पन्न होता था, अतः संविधान में इसे निषेध कर दिया गया। इस अनुच्छेद में ये व्यवस्था दी गई है कि ''सेना अथवा विधा सम्बन्धी उपाधियों के अलावा राज्य अन्य कोई उपाधियां प्रदान नहीं कर सकता''। इसके साथ ही राष्ट्रपति के अनुमति के बिना भारत का कोई नागरिक विदेशी राज्य से कोई उपाधि स्वीकार नहीं कर सकता।

हालांकि अनुच्छेद 18 के बावजूद भारत सरकार द्वारा 1950 से ही भारत रत्न, पदम विभूषण, पदम भूषण, पदश्री आदि उपाधियां दी जाती रही हैं। 1977 में इमरजेंसी के बाद जब जनता पार्टी की सरकार बनी तो महान्यायवादी ने राय दी कि ये उपाधियां 18 की धारा 1,2,3, के शब्दों और भावनाओं के अनुरूप नहीं हैं। जिस पर जुलाई 1977 को संसद में एक विधेयक पारित करके इन उपाधियों को समाप्त कर दिया गया। मगर 1980 में आई इंदिरा गाँधी सरकार ने पुनः उपरोक्त उपाधियों को मान्यता दे दी और निश्चय किया कि भविष्य में भी ये उपाधियां दी जाती रहेंगी।

.....जारी.....

❖❖❖

हमारा संकल्प

नाज़िश प्रतापगढ़ी

हम एक थे, हम एक हैं,
हम एक रहेंगे, हम एक रहेंगे

आँधी के क़दम रोकेंगे तूफ़ां से लड़ेंगे
हम हाथों में डाले हुए जब हाथ चलेंगे
रश्क आये ज़माने को कुछ इस तरह जिएंगे
जो टूट न सकती हो वह ज़नजीर बनेंगे
हम एक रहेंगे
हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहेंगे,

रस्ते के ख़मो पेच से हरगिज़ न डरेंगे
ख़ुशबू की तरह मुल्क के गुलशन में रहेंगे
शमओं की तरह गहरे अँधेरों में जलेंगे
हम बन के लहू धरती की रग रग में बहेंगे
हम एक रहेंगे
हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहेंगे,

मक्कारों की साज़िश से ख़बरदार रहेंगे
गद्दारों के साये से भी बच बच के चलेंगे
भारत में किसी झगड़े को भी उठने न देंगे
सब लोग इक आवाज़ में मिलजुल के कहेंगे
हम एक रहेंगे
हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहेंगे,

हम फ़िरक़ा परस्ती के अंधेरों से बचेंगे
फन्दे में न अब शेख़ व ब्रह्मण के फंसेंगे
आपस में ग़लत धर्म की ख़ातिर न लड़ेंगे
मज़हब के तक़द्दुस को न शर्मिन्दा करेंगे
हम एक रहेंगे
हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहेंगे,

काँधे से जो हम जोड़े हुए काँधा बढ़ेंगे
इक देश में, इक हाल में, इक रंग रहेंगे
फ़ौलाद की चलती हुई दीवार बनेंगे
मैख़ान–ए–भारत में सब इक साथ पिएंगे
हम एक रहेंगे
हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहेंगे,

(''नया दौर'' जनवरी, फरवरी 1982 से ग्रहीत)

❖❖❖

अमन व अमान के नाम पर बनने वाली संस्थाएं और उनकी दज्जाली नीतियां

इं0 जावेद इक़बाल

वर्तमान काल, हमारे प्रिय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के शब्दों में महाकाल है। हमें इस पर कोई आश्चर्य नहीं है, हमें तो इस काल का इंतजार सैंकड़ों साल से था। हमें हमारे हादि–ए–बरहक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 1400 साल पहले ही आगाह कर गए थे कि एक ज़माना आएगा जिस में झूठ और फरेब आम होगा हर बात में, हर बयान में और हर काम में दज्ल होगा, मुलम्मा साजी होगी। हर चमकती चीज़ के परदे में छल होगा, कपट होगा। इसीलिए तो इस दौर को दज्जाली दौर कहा गया है। आज इसकी हर निशानी हमारी नज़रों के सामने है, बस ओझल है तो दज्ले आजम का वुजूद ओझल है, वह भी निकट भविष्य में सामने आ ही जायेगा।

फिलहाल तो हम विश्व स्तर की बड़ी बड़ी नामवर संस्थाओं के दज्ल में जकड़े हुए हैं। तरह तरह की वर्ल्ड आर्गनाइजेशंस क्या हैं? यह सब सब्ज बाग दिखा कर इंसानियत को तबाह व बर्बाद करने का काम बड़ी चतुराई से कर रही हैं। इस समय दुनिया में लगभग 300 विश्व स्तर की संस्थायें काम कर रही हैं। जिन में UNO (यूनाइटेड नेशंस आर्गनाइजेशन) सब से प्रमुख स्थान रखती है। इसकी स्थापना दूसरे विश्व युद्ध के बाद 26 जून 1945 को हुई थी। इसके पांच मुख्य काम हैं।

1. दुनिया में शांति स्थापित करना, जिसमें इसे कभी कोई कामयाबी नहीं मिली।

2. मानव अधिकारों की रक्षा करना, यह भी बस बातें ही बातें हैं, हक़ीक़त में कौन किस की सुनता है, जब दुनिया के किसी भाग में तबाही फैल जाती है, शैतानों की टोलियां हैवानियत का नंगा नाच कर गुज़र जाती हैं तब इस संस्था की तरफ़ से कुछ बयान बाजियां होती हैं, कुछ रिज्युलेशंस पास किये जाते हैं और फिर यह संस्था अपने तीसरे काम की ओर अग्रसर होती है जिसके अधीन लुटे पिटे लोगों की सहायता के नाम पर कुछ खाने पीने और पहनने की व्यवस्था की जाती है, रहने के लिए कुछ कैम्प स्थापित किए जाते हैं। यह काम भी बस सैकड़ों हजारों लोगों को जिंदा दरगोर कर देने के समान ही होता है। क्योंकि कैम्पों में उन बेसहारा लोगों की जिंदगियां बीत जाती हैं और कोई स्थाई समाधान नहीं निकलता।

यू एन ओ का चौथा काम support sustainable development & climate action (सतत विकास और जलवायु कार्यवाही के समर्थन) का है इस के तहत यू एन ओ का उद्देश्य है कि दुनिया को गुरबत से निकाल कर अवाम को सुख सुविधाएं मुहय्या कराना। जिसके लिए यह संस्था अपने सदस्य देशों में विकास के कार्यों में सहायता उपलब्ध कराती है और बदलते पर्यावरण को नियंत्रित करने और सुरक्षित दायरे में रखने के प्रयासों में सहयोग देती है। इसी के अंतर्गत समय समय पर यह संस्था अवाम में जागरूकता लाने के उद्देश्य से विभिन्न मुद्दों पर नये नये उनवान से अलग–अलग तारीखों पर दिवस या काल मनाने का निर्णय लेती है जैसे 1975 में महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने और

दुनिया की आधी उपेक्षित आबादी को सम्मान दिलाने के नाम पर प्रतिवर्ष 8 मार्च का दिन महिला दिवस (International Women' s Day) के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। महिलाओं को इस महिला दिवस को मनाने से कितना सम्मान मिला और कितनी सुरक्षा मिली, इसका अंदाजा तो दैनिक समाचार पत्रों को पढ़ने वाले खूब जानते हैं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि अख़बारों के पन्ने महिलाओं की हत्याओं और बलात्कारी घटनाओं से खाली न होते हों। इसीलिए निःसंकोच कहा जा सकता है कि महिला दिवस या कोई भी अन्य दिवस मना लेने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस हक़ीक़त को UNO भी भली भांति जानता होगा। मगर पर्दे के पीछे उसका जो मक़सद है वह तो उसे हासिल हो ही रहा है, फिर चिंता किस बात की। महिलाओं के अधिकार के नाम पर वह काम किया जा रहा है जिस के नतीजे में औरत को दुनिया भर में, क्या दफ़्तर क्या बाज़ार हर जगह पुरुषों के लिए खिलौना बना कर पेश कर दिया गया है। नतीजे में जो कुछ हुआ या जो हो रहा है, कहने की ज़रूरत नहीं, सब के सामने है कि समाज में महिलाओं को कुछ आर्थिक लाभ तो हुआ मगर उन्हें वह सम्मान नहीं मिला जो उसे मां, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में पहले हासिल था।

घर की साज सज्जा और शान शौकत को बढ़ाने में तो उसका योगदान रहा मगर दिल का सुकून छिन गया । अब उसे घर की जिम्मेदारियां निभाने के साथ साथ बाहर के कारोबार की जिम्मेदारियां भी निभानी पड़ने लगीं और कहीं कहीं पर तो उस की इज्जत पर हमले भी होने लगे। अब औरत की सुरक्षा को ले कर UNO चिंतित हो उठा। महिलाओं को सुरक्षा पुरुष के माध्यम से दिया जाना असंभव था क्योंकि असुरक्षा का कारण तो पुरुष ही था अतः स्वयं महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से UNO के द्वारा एक अन्य दिन उनके नाम करने का निर्णय लिया गया जिस का नाम International Girls Child Day रखा गया। पहला IGC day 11 अक्टूबर 2012 को मनाया गया , इसके उद्देश्यों में लड़कियों को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराना, उन में समाज की चुनौतियों का मुकाबला करने की हिम्मत पैदा करना, मार्शल आर्ट के दांव–पेंच सिखाना, भले व्यक्ति और बुरे व्यक्ति की पहचान कराना, बाल विवाह की खराबियों से अवगत कराना आदि IGC day के मुख्य उद्देश्य हैं। यह IGC day ही का प्रभाव है कि वर्तमान में स्कूल कालेजों में को–एजुकेशन (मखलूत तालीम) का रिवाज बढ़ गया है और हमारे इस्लामी नाम वाले इदारे भी बड़े जोश के साथ इस गंदगी में कूद पड़े हैं। इसके पीछे का दज्ल और मुलम्मा साजी भी पूरी तरह स्पष्ट है मगर किस के लिए? जिसके दिल की आंखें खुली हों, जिसे हादि–ए–बरहक की नसीहतों का इल्म हो, उन पर ईमान व यकीन हो और जिसे दज्जाली फितनों का इल्म हो जिन से रसूले अकरम सल्ल० ने आगाह किया था।

महिलाओं के अधिकारों के सिलसिले में इस्लाम की नीति और तालीमात तो स्पष्ट हैं। अल्लाह तआला ने औरत और मर्द के जिस्म की बनावट में, क्षमता में, शक्ति में, भावनाओं में स्पष्ट अंतर रखा है, जो एक ओर तो अज्ञान काल से आज तक प्रत्येक पढ़े लिखे और अनपढ़ व्यक्ति को नज़र आता है। दूसरी ओर वर्तमान काल में जबकि मेडिकल साइंस ने इंसानी शरीर के ऐसे ऐसे राज खोले हैं और जर्रे–जर्रे का विश्लेषण करके रख दिया है, जिस से पता चला है कि औरत और मर्द के प्रत्येक अंग, नाड़ी,

रक्त, साल्ट इत्यादि की संरचना में विशेष अंतर है। ऐसी हालत में यदि कहा जाए कि दोनों के कार्य क्षेत्र में उचित अनुचित का फैसला करने का अधिकार उसी रचियता को है जिसने इन दोनों की रचना की है ।

कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि महिलाएं वह कार्य नहीं कर सकती जो पुरुष करता है। नहीं, बल्कि बहुत सी महिलाएं अनेकों पुरुषों से बढ़ कर बेहतर अंदाज़ से किसी भी काम को कर सकती हैं। मगर महिलाओं के जो मूल कर्तव्य हैं उनका निर्वाह करना उनकी प्राथमिकता होना चाहिए। उन्हें एक अच्छी मां, बहन, बेटी और पत्नी बनने की शिक्षा प्राथमिकता के आधार पर दी जाना चाहिए, फिर जिन में सलाहियत हो, योग्यता हो उन्हें अन्य उच्च स्तरीय शिक्षा भी अवश्य लेना चाहिए, मगर आपसी मेलजोल की सीमाओं का ध्यान रखते हुए ताकि समाज में उनकी अस्मिता क़ायम रहे उनकी इज़्ज़त पर कोई आँच न आने पाए। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि महिला वर्ग को महिला डॉक्टर की भी ज़रूरत है, महिला टीचर की भी ज़रूरत है तथा जीवन के क्षेत्रों में महिलाएं कभी कभी अधिक उपयोगी होती हैं। अतः शिक्षा तो वे अवश्य प्राप्त करें, आगे बढ़ने के अवसर उन्हें अवश्य मिलने चाहिए मगर अपनी सीमाओं का ध्यान रखना भी ज़रूरी है।

अंत में UNO के पाँचवें मुख्य कार्य के विषय में भी समझते चलें, यह पाँचवां कार्य है– To uphold International Law" इस के अंतर्गत यह संस्था विभिन्न देशों के बीच उठ खड़े होने वाले विवादों का निपटारा अंतरराष्ट्रीय कानूनों के तहत करने का दावा करती है मगर जग ज़ाहिर है कि इस क्षेत्र में भी इस संस्था को कभी कोई कामयाबी नहीं मिली। ◆◇◆

एक लाभदायक किताब का परिचय

''शायद की उतर जाए, तेरे दिल में मेरी बात'' –इदारा

ऊपर लिखित शीर्षक,, मौलाना इक़बाल हैदर नदवी के चयनित निबंधों का संग्रह है जो देश के प्रसिद्ध इल्मी और साहित्यिक उर्दू मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए जो इल्मी हलकों में क़द्र की निगाह से देखे और पढ़े गए, इक़बाल हैदर नदवी साहब एक इल्मी, दीनी खानदान के चश्म चराग़ और होनहार सपूत हैं, और दारुल उलूम नदवतुल उलमा जैसे विश्वव्यापी विद्यालय के तालीम याफ़्ता हैं, इसलिए उनके क़लम से अच्छी भाषा और अचछी शैली में लाभदायक और उपयोगी निबंध निकले जिनकी संख्या 48 है, यह निबंध विभिन्न शीर्षकों पर आधारित हैं, इल्मी दीनी, अदबी और तारीख़ी हर हैसियत से यह आर्टिकल बहुत लाभप्रद हैं, हैदर नदवी को अपनी ज़बान पर सामर्थ्य है, इसलिए कम शब्दों में सरलता पूर्वक अपनी बात अच्छे ढंग से अदा करते हैं, पढ़ने वाला उसको शौक से पढ़ता है, उम्मीद है कि हैदर नदवी अपने इल्मी सफ़र को जारी रखेंगे और बलन्द मक़ाम पर पहुँचेंगे, किताब का गेटअप बहुत अच्छा है, प्रिंटिंग और कागज़ मेयारी है, जिसकी वजह से किताब बहुत आकर्षक है। पढ़े लिखे लोगों से अनुरोध है कि इस किताब को ज़रूर पढ़ें ताकि उनकी इल्मी प्यास बुझे और रूहानी सुकून मिले, किबात का नाम स्वंय प्रभावित और आकर्षित करने वाला है। आप किताब निम्नलिखित जगहों से प्राप्त कर सकते हैं:–

1. इक़बाल हैदर नदवी स्थानवां जिला–नालन्दा (बिहार), मो0 8651155503
2. बुक इम्पोरियम उर्दू बाज़ार, सब्जी बाग़ पटना–4,
3. मकतबा अल–फ़ुर्कान बुक डिपो, नज़ीराबाद, लखनऊ, उ0प्र0 ।, 4. शाह नवाज़ हैदर शमसी, –44, हाजी कॉलोनी निकट ग़फ़्फ़ार मंज़िल, जामिआ नगर नई दिल्ली मो0 8800905056 ◆◇◆

रोज़े महशर के पाँच सवाल

शगुफता ज़ाकिर

अल्लाह के नबी सल्ल0 ने इरशाद फरमाया कि क़यामत के दिन इंसान के दोनों क़दम उस वक़्त तक हिसाब की जगह से नहीं हट सकते जब तक उससे पाँच सवाल न पूछ लिये जायें।

1). ज़िन्दगी कहाँ गुज़ारी।
2). अपनी जिस्मानी कूव्वत किस काम में लगाई।
3). माल कहाँ से कमाया
4). माल कहाँ पर खर्च किया।
5).जितना इल्म था उस पर कितना अमल किया।

(जामे तिर्मिज़ी–2417)

अगर इन पाँचों सवालों पर ग़ौर किया जाये तो इन पाँच सवालों के इर्द–गिर्द ही हमारी पूरी ज़िन्दगी घमती है। यह बहुत अहम मसला है। जवाब आसान नहीं, अगर अल्लाह के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़र गयी तो कामयाबी ही कामयाबी वरना नाकामी के सिवा कुछ नहीं। अगला सवाल जिस्मानी कूवत (जवानी) के मुताल्लिक़ होगा क्योंकि ये ज़िन्दगी का वह हिस्सा है जिसमें इन्सान के अन्दर सबसे ज़्यादा कूवत होती है सबसे ज़्यादा मसरूफ़ियत होती है जिस उम्र में गुनाह का ख़ौफ़ सबसे ज़्यादा होता है। इस उम्र में जब बन्दा सिर्फ अल्लाह के खौफ़ से किसी गुनाह को छोड़ देता है तो अल्लाह बहुत खुश होता है। अल्लाह को तीन चीज़ें बेहद पसन्द हैं– सर्दी का वज़ू, गर्मी के रोज़े और जवानी की इबादत। अल्लाह के नबी ने इस उम्र की इबादत की अहमियत बताते हुए ये तलक़ीन की है कि तुम ये किया करो नबी सल्ल0 ने फरमाया अल्लाह तआला रोज़े क़यामत 7 क़िस्म के लोगों को अपने अर्श का साया नसीब फरमायेगा जिस रोज़ अर्शे इलाही के सिवा कोई साया न होगा उनमें से एक वो नौजवान होगा जिसकी जवानी इबादत में गुज़री है।

(सही बुख़ारी–6806)

गोया अल्लाह जवानी की इबादत को बेहद पसन्द करता है क्योंकि जवानी की इबादत कठिन और मुश्किल है लिहाजा इसका अज्र भी बड़ा मिलेगा। लेकिन अफ़सोस कि आज का मुसलमान उम्र के इस अहम हिस्से को दुनिया कमाने में गुज़ार देता है और जब बुढ़ापे की उम्र में पहुँचता है और उसके अन्दर नौकरी या काम करने की कूवत नहीं रहती। जब वह बिल्कुल फ़ारिग़ हो जाता है तब अल्लाह की इबादत करता है और इस उम्र तक पहुँचने पर बहुत से लोगों में न तो सज्दा करने की कूवत रह जाती है और न खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की, हालांकि अल्लाह तो अरहमुर्राहिमीन है वह अपने बन्दे की इस उम्र की इबादत को भी कुबूल करता है लेकिन अपनी सारी मसरूफ़ियत के बीच अल्लाह को वक़्त देना ये अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द है।

तीसरा सवाल होगा कि माल कहाँ से कमाया। ये सवाल इसलिए अहम है कि इसी माल को कमाने के पीछे इन्सान अपने रब को भूल गया। इसी माल के पीछे पड़ कर अपनी आखिरत भुला दी। इसी माल को कमाने के पीछे न हलाल देखता है न

हराम। इसी माल के पीछे अपनी पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देता है और एक दिन इसी माल और दौलत को दुनिया में छोड़ कर मिट्टी में मिल जाता है। कितना अजीब है इन्सान, सारी ज़िन्दगी रिज़्क के पीछे भागता है और जो रिज्क देने वाला है उसे भूल जाता है।

तबरानी की हदीस है नबी सल्ल0 ने फरमाया ''ऐ साद! हलाल का खाना खाओ तुम्हारी दुआएं कबूल होंगी। क़सम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है जब बन्दा अपने पेट में हराम का लुक़्मा डालता है तो इस वजह से उसकी चालीस दिन की इबादतें कबूल नहीं होतीं। जो बन्दा हराम से अपना गोश्त बढ़ाता है जहन्नम की आग उस के बहुत करीब होती है।'' बन्दा हराम की कमाई से जो कुछ हासिल करता है उसमें से उसका सद्क़ा कबूल नहीं होता और न ही राहे खुदा में उसको देने से उसके माल में बरकत होती है बल्कि जो माल वो अपने पीछे छोड़ जाता है वह उसके लिए जहन्नम का सामान होता है। लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए कि वह माल कमाने के लिए हलाल रास्ता इख़्तियार करे। बेशक अल्लाह रज़्ज़ाक़ है और हलाल तरीके से कमाये गये माल में इतनी बरकत डाल देता है कि वह ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए काफ़ी होता है।

चौथा सवाल माल खर्च करने के मुताल्लिक़ होगा। इंसान माल और दौलत कमाने में यह भूल जाता है कि जो माल और दौलत अल्लाह ने उसे दी है उस पर ग़रीब और मज़लूम का भी हक़ है। इस्लाम के पाँच बुनियादी अरक़ान में से ज़कात भी एक है, लिहाज़ा हर वो मुसलमान जो साहिबे हैसियत हो उस पर ज़कात फर्ज़ है। अल्लाह ने कुर्आन में इरशाद फ़रमाया है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाला कभी ग़रीब नहीं होगा बल्कि अल्लाह उसे अपने फज़्ल से ग़नी कर देगा और जिस नेक काम में इन्सान अपने माल को खर्च करेगा उस काम का सवाब उसे क़यामत तक पहुँचता रहेगा।

अल्लाह कुर्आन में फ़रमाता है:–

जो लोग अपना माल खुदा की राह में ख़र्च करते हैं उनके (खर्च) की मिसाल उस दाने की सी है जिसकी सात बालियाँ निकलें और हर बाली में सौ–सौ दाने हों और खुदा जिसके लिए चाहता है ख़ूब बढ़ाता है और खुदा बड़ी गुन्ज़ाइश वाला है वह हर चीज़ से वाक़िफ़ है। जो लोग अपना माल खुदा की राह में खर्च करते हैं और फिर खर्च करने के बाद किसी तरह का एहसान नहीं जताते हैं और न जिन पर एहसान किया है उनको सताते हैं उनका अज्र व सवाब उनके परवरदिगार के पास है और न आखिरत में उन पर कोई खौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे।

(सूरः अल बकराः 261–262)

और उनके मालों में माँगने वालों और मोहताजों का अधिकार होता था।

(सूरः ज़ारियात–19)

रोज़े क़यामत जो सात शख़्स अर्श–ए–इलाही के साये में होंगे उनमें से एक शख़्स वो होगा जिसने इन्तिहाई राज़दारी से राहे ख़ुदा में खर्च किया होगा यहां तक कि उसके बायें हाथ को भी न पता चले कि दायें हाथ ने क्या ख़र्च किया है। पोशीदा सद्क़ा आने वाली मुसीबतों और

परेशानियों को टाल देता है। इसका अन्दाज़ा लगाना भी मुश्किल है कि अल्लाह की राह में खर्च करने का कितना फायदा है लेकिन दुनिया में हमें इसका फाएदा दिखता नहीं इसीलिए हमें इसकी अहमियत का पता नहीं है। ये माल ही या तो इन्सान के जन्नत जाने का सबब बनेगा या फिर जहन्नम में जाने का। इन्सान जिस माल और दौलत को अपनी शान समझता है। जिस माल और दौलत के मिलने पर ज़मीन पर तकब्बुर के साथ चलता है उस माल और दौलत का हिसाब उसे रोज़े महशर में देना होगा, लिहाजा अल्लाह की राह में खूब माल ख़र्च करके अल्लाह को राज़ी कर ले। अल्लाह की खुशनूदी और कुर्ब हासिल करने का यह सबसे आसान तरीक़ा है।

पाँचवा सवाल इल्म के ताल्लुक से होगा। ये सवाल रोजे महशर हमारे लिए सबसे मुश्किल होगा क्योंकि अल्लाह ने हमें तमाम मख़लूक में सबसे अक्लमंद और ज़हीन बनाया है। सोचने समझने की कूवत दी है। अल्लाह ने अम्बिया अलैहिस्सलाम को भेजा, किताबें उतारीं ताकि हम सही और ग़लत में फ़र्क़ कर सकें। हर मुसलमान को दीन के ताल्लुक़ से जितना इल्म है अगर उस पर भी अमल करे तो बहुत से गुनाहों से बच सकता है। हर मुसलमान को इल्म है कि अल्लाह ने हमारे लिए क्या हलाल किया है और क्या हराम किया है। हर मुसलमान को मालूम है कि नमाज़ छोड़ना गुनाह है, कुर्आन न पढ़ना गुनाह है, ग़ीबत करना गुनाह है, किसी का हक़ मारना गुनाह है। इसके अलावा बहुत से सग़ीरा और कबीरा गुनाह का पता है लेकिन आज ये सारे गुनाह हमारे मुआशरे में इतने आम हो गये हैं कि अब ये सब गुनाह हमें गुनाह ही नहीं लगते। बाज़ मुसलमान ऐसे भी हैं जो नमाज़ और सुन्नत की अहमियत पर बड़ी–बड़ी बातें करेंगे लेकिन खुद उस पर अमल करने में पीछे हैं। उन्होंने अपने इल्म को सिर्फ अपनी बातों तक ही महदूद कर रखा है।

अल्लाह हमें ज़्यादा से ज़्यादा इल्म हासिल करने के साथ उस पर अमल करने की भी तौफीक़ अता फरमाये।

(आमीन)

अफ़सोस की बात है कि जितनी फिक्र हमें आख़िरत की होनी चाहिए उतनी फिक्र अब दुनिया की हो गयी है। क्या मुसलमानों का ईमान इतना कमज़ोर होता जा रहा है कि जिन बातों के लिए अल्लाह ने हमें कुर्आन के ज़रिये, अम्बिया अलै0 के ज़रिये बार–बार आगाह किया है उन बातों से हम इतना बेफिक्र और ग़ाफ़िल होते जा रहे हैं और ये भूल गये कि हमें मर कर इस मिट्टी में मिल कर वापस इस मिट्टी से निकल कर अल्लाह के सामने खड़े हो कर अपने आमाल का हिसाब देना है। सिर्फ दुनिया की फिक्र करना एक मोमिन की सिफ़त तो हो ही नहीं सकती। मोमिन का तो ये ईमान होना चाहिए कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के बाद एक और ज़िन्दगी है जिसकी तैयारी हमें इसी दुनिया में रह कर करनी है।

कहीं दो लाईन पढ़ी थी जो ग़ौर व फिक्र करने के काबिल है–

एक शख़्स का कब्रिस्तान के सामने से गुज़र हुआ उसने कहा कितने सुकून से सो रहे हैं तभी अन्दर से आवाज़ आयी ''सो तो आप लोग रहे हैं हम तो सोने की सज़ा भुगत रहे हैं''

अल्लाह आलिमुल ग़ैब है

उसे पता है कि इन्सान दुनिया से जाने के बाद किन बातों पर अफ़सोस करेगा इसलिए अल्लाह ने पहले ही इन बातों का जिक्र कुर्आन में कर दिया है। शायद इसी से इन्सान कुछ सीख हासिल करे।

''ऐ रसूल अगर तुम उन लोगों को उस वक़्त देखते जब जहन्नम पर ला कर खड़े किये जायेंगे तो उसे देख कर कहेंगे ऐ काश हम दुनिया में फिर लौटा दिये जायें और अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाते और हम मोमिनीन में से होते। मगर उनकी आरजू पूरी न होगी।''

(सूरः अंआम–27)

और कुफ़्फ़ार ये भी तो कहते हैं कि हमारी इस दुनियावी ज़िन्दगी के सिवा कुछ भी नहीं और हम मरने के बाद उठाये ही न जायेंगे।

(सूरः अल अंआम–29)

''हाय अफ़सोस काश मैं फलां शख़्स को अपना दोस्त न बनाता''।

(सूरः अल फुरकान–28)

''(अफसोस) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया। हाय मेरी सल्तनत खाक़ में मिल गयी।

(सूरः अल हाक्कः 28–29)

''और जिसका नाम–ए–आमाल उनके बायें हाथ में दिया जायेगा तो वह कहेगा ऐ काश मुझे मेरा नाम–ए–आमाल न दिया जाता। और मुझे मालूम न होता कि मेरा हिसाब क्या है''।

(सूरः अल हाक्कः25–26)

''और ये दुनियावी ज़िन्दगी तो खेल तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं और ये तो ज़ाहिर है कि आखिरत का घर (बहिश्त) परहेज़गारों के लिए कई गुना बेहतर है तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते''।

(सूरः अल अंआम–32)

''तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले आयी? वे कहेंगे, हम नमाज़ अदा करने वालों में से न थे और न हम मुहताज को खाना खिलाते थे और व्यर्थ बात में पड़े रहने वालों के साथ हम भी उसी में लगे रहते थे और हम बदला दिये जाने के दिन को झुठलाते थे।''

(सूरः मुदस्सिरः 42–46)

''हमने तुम लोगों को अनक़रीब आने वाले अज़ाब से डरा दिया जिस दिन आदमी अपने हाथों पहले से भेजे हुए आमाल को देखेगा और काफिर कहेगा काश मैं खाक़ हो जाता।''

(सूरः नबा–40)

आख़िरत की ज़िन्दगी के ताल्लुक़ से बहुत सारी आयतों का जिक्र किया है। अल्लाह इन आयातों पर ग़ौर व फिक्र करने की तौफ़ीक़ अता फरमाये। अल्लाह ने बार–बार कुर्आन में बताया है कि आख़िरत की ज़िन्दगी के मुकाबले दुनियावी ज़िन्दगी बस थोड़ी सी है। तो जहाँ हमें ज़्यादा वक़्त गुज़ारना है तैयारी भी वहाँ की ज़्यादा होनी चाहिए।

अल्लाह हमें कहने सुनने से ज़्यादा अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाये और दुनियावी ज़िन्दगी की कामयाबी के साथ–साथ आख़िरत की फिक्र करने वाला बनाये और आख़िरत में भी कामयाबी अता फरमाये। (आमीन)

❖❖❖

अनुरोध

अगर आपको ''सच्चा राही'' की सेवायें पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि ''सच्चा राही'' के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(सम्पादक)

मोबाइल का दुरुपयोग

अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

बच्चों के हाथ मोबाइल, गोली है नशे की।
यह लत नहीं मिटेगी, गोली है नशे की।।

लड़की हो चाहे लड़का, मोबाइल एक चसका।
शिक्षा को देगा धक्का, गोली है नशे की।।

नौजवान देखो, सब फोन में फंसे हैं।
अब सभ्यता ख़तम है, गोली है नशे की।।

अश्लील फोटो ग्राफी, अश्लील प्रदर्शन।
अश्लील सोच उनकी, गोली है नशे की।।

समझाना कोई चाहे, समझे नहीं नशेड़ी।
मोबाइल में मगन हैं, गोली है नशे की।।

बहुतेरे लड़का लड़की, बर्बाद हो रहे हैं।
मोबाइल नहीं छूटे, गोली है नशे की।।

करना है सदुपयोग तो, इसमें नशा नहीं।
करना है दुरुपयोग तो, गोली है नशे की।।

मोबाइल को पकड़ लो, ज्ञान प्राप्त कर लो।
उपयोग अच्छा करलो, गोली है मजे की।।

शिक्षा ही प्राप्त करलो, शुभ कर्म कोई सीखो।
धनोपार्जन करलो, गोली है मजे की।।

पल भर में खबर लेलो, शुभ चिन्तक बन जाओ।
दुनिया को समझाओ, गोली है मजे की।।

हित अनहित बतलाओ, शिक्षा की ज्योति जलाओ।
सिद्दीक़ी तुम समझाओ, बात है मजे की।।

❖❖❖

सेकंड की रिटायरमेंट

राहुल पाण्डेय

सेकंड की रिटायरमेंटः–

दुनिया भर के कम्प्यूटर, मोबाइल और सॉफ्टवेयरों का सिरदर्द बन चुका ''लीप सेकंड'' आखिरकार अब रिटायर होने जा रहा है। पिछले हफ्ते फ्रांस के वर्साय में दुनिया भर में माप मानकों को निर्धारित करने वाले वैज्ञानिकों ने इसे रिटायर करने के पक्ष में सर्वसम्मति से वोट दिया। पचास साल से दुनिया लीप सेकंड का प्रयोग करती आ रही है और बीस साल से इसे रिटायर करने पर वैज्ञानिकों में बहस चल रही है। यह वही लीप सेकंड है, जिसे 2012 में जब जोड़ा गया था तो कई कम्पनियों के सॉफ्टवेयर क्रैश हो गये थे और जावा के प्रोग्रामों में गड़बड़ी आ गई थी। तभी से गूगल, ऐमजॉन, मेटा और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कम्पनियां लीप सेकंड को खतरनाक बताते हुए इसे खत्म करने की मांग कर रही थीं। अमेरिका भी तभी से इसे खत्म किये जाने की वकालत कर रहा था और पिछले शुक्रवार को उसने भी इसे खत्म करने के पक्ष में ही वोट दिया। हालांकि रूस अभी अपनी दिक्कतें बताते हुए इसे तुरंत रिटायर करने का विरोध कर रहा है, तब भी इसे 2035 या उससे पहले खत्म कर देने की योजना है।

जैसे हर चार साल बाद आने वाली फरवरी में एक दिन और जोड़ दिये जाते हैं, जिसकी वजह से उसे ''लीप ईयर'' कहा जाता है, वैसे ही वैज्ञानिकों को कभी–कभार समय में भी एक सेकंड जोड़ने की ज़रूरत पड़ती है। दरअसल धरती को एक चक्कर लगाने में 86,400 सेकंड यानी 24 घंटे लगते हैं। मगर गुरुत्वाकर्षण से यह लड़खड़ा जाती है, जिससे चक्कर के सेकंडों को सटीक रूप से नापें तो यह 86,400.002 होता है। 0.002 सेकंड साल भर में 2 मिली सेकंड होते हैं, और 3 साल में एक पूरा सेकंड बन जाता है। इसके चलते धरती के चक्कर में लगने वाले समय का तालमेल इंटरनेशनल एटॉमिक टाइम से बिगड़ जाता है। हम सबके मोबाइल, लैपटॉप, कम्प्यूटर सहित वैज्ञानिकों के अंतरिक्ष में चल रहे सारे अभियान इसी एटॉमिक टाइम से जुड़े हैं। ये सब सेकंड के अरबवें हिस्से में भी होने वाली हेरफेर बर्दाश्त नहीं कर सकते। इसलिए इसी समय को सही करने के लिए एटॉमिक घड़ी में एक सेकंड जोड़ा जाता रहा है।

रूस की चिंता यह है कि दुनिया भर के जहाजों को रास्ता बताने वाला इसका ग्लोनास सैटलाइट सिस्टम लीप सेकंड सिस्टम पर चलता है। वैसे चिंता तो अमेरिका को भी है कि इसका जीपीएस भी लीप सेकंड सिस्टम पर चलता है। अगर यूटीसी से लीप सेकंड हटाया तो समुद्री जहाज तो रास्ता भूलेंगे ही, हम में से वह सब रास्ता भूल जाएंगे, जो नेविगेशन के लिए अब पूरी तरह से जीपीएस पर निर्भर हो चुके हैं। मगर घबराने की बात नहीं है। शुक्रवार को फ्रांस में जो रेजॉल्यूशन पास हुआ, उसके मुताबिक दुनिया 2035 से लेकर 2135 तक, यानी सौ साल तक लीप सेकंड यूज नहीं करेगी। यानी इन दोनों देशों के पास बहुत वक्त है कि ये अपना–अपना सिस्टम अपग्रेड कर लें। फिर अभी इसे रिटायर करने के फैसले पर अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ का भी वोट मिलना बाकी है। यह अगले साल दुबई में होने वाले विश्व रेडियो संचार सम्मेलन में होगा।

(एन.बी.टी. लखनऊ से ग्रहीत)

❖❖❖

औषधीय गुणों का भंडार है छुईमुई का पौधा

डॉ0 महेश नारायण गुप्ता

छुईमुई या लाजवंती एक संवेदनशील पौधा है जिसकी पत्तियों को छूने पर वह सिकुड़ जाती हैं। आयुर्वेद के मुताबिक, यह पौधा औषधीय गुणों का भंडार है। आदिवासी इलाके में इसका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा के लिए काफी समय से किया जाता रहा है। इसकी पत्तियों में एंटीवायरल और एंटीफंगल गुण पाये जाते हैं। आयुर्वेदिक तरीक़ों से इसका उपयोग करने पर बवासीर, डायबिटीज समेत कई समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। आइए जानते हैं इसके प्रयोग से सेहत को मिलने वाले फायदों के बारे में–

अस्थमा में असरदारः–

अस्थमा की समस्या में इसे असरदार आयुर्वेदिक औषधि माना जाता है। इसमें कफ को खत्म करने के गुण पाए जाते हैं, इसलिए इसके उपयोग से अस्थमा की समस्या में कफ बनने से छुटकारा पाया जा सकता है।

पीलिया का इलाज करेः–

इसकी पत्तियों के रस के नियमित सेवन से पीलिया की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

आयुर्वेद में छुईमुई के उपयोग से कई बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। लेकिन किसी गंभीर बीमारी में इसके उपयोग से पहले आयुर्वेदिक विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें।

डिप्रेशन में फायदेमंदः–

इसके उपयोग से तनाव और डिप्रेशन की समस्या को खत्म किया जा सकता है। याददाश्त में सुधार के लिए भी यह बहुत फायदेमंद माना जाता है। इसकी पत्तियों के अर्क का सेवन करने से मानसिक समस्याओं में फायदा मिल सकता है।

ब्लड शुगर कंट्रोल करेः–

इसकी पत्तियां शरीर में बढ़े हुए ब्लड शुगर के स्तर को कम करने में फायदेमंद मानी जाती हैं। पत्तियों से बने काढ़े का नियमित सेवन करने से डायबिटीज की समस्या में फायदा मिल सकता है।

बवासीर में राहत देः–

बवासीर के इलाज के लिए इसका इस्तेमाल प्राचीन काल से ही होता आ रहा है। इसकी पत्तियों से रक्तस्राव को रोका जा सकता है।

दस्त से छुटकारा दिलाएः–

दस्त और पेचिश आदि की समस्या में इसकी पत्तियों का अर्क पीने से फायदा मिल सकता है। इसके अलावा इस पौधे की जड़ का चूर्ण और काढ़ा भी फायदेमंद हो सकता है।

❖❖❖

(राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, लखनऊ)
एन.बी.टी. डेस्क, लखनऊ के
शुक्रिए के साथ

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

प्रतिबन्धित किताबों की लाइब्रेरीः—

एक अमेरिकी द्वीप पर स्थित एक छोटी सी लाइब्रेरी में सिर्फ वही किताबें रखी जाती हैं जो नापसंदीदा और प्रतिबंधित घोषित की जा चुकी होती हैं, उसका नाम ''मेरी निक्स आईलैंड लाइब्रेरी'' है जो पोर्ट नाक्समेन से 35 कि0मी0 दूर समंदर में मेरी निक्स नामी द्वीप पर स्थित है इसकी आबादी 100 लोगों से भी कम पर आधारित है यह छोटी सी लाइब्रेरी प्रतिदिन 24 घंटे खुली रहती है और इसका उद्देश्य सिर्फ वही किताबें इकट्ठा करना है जो अमेरिका में अस्थाई तौर पर या स्थाई तौर पर प्रतिबंधित की जा चुकी हैं इस लाइब्रेरी को वहाँ के कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी स्वयं की कोशिश से क़ायम किया है। और इसका उद्देश्य अमेरिकियों को सब्र व बर्दाश्त का आदी बनाना है ताकि वह अमेरिकी हुकूमत की ओर से प्रतिबंधित ठहराई गई किताबों का अध्ययन करके उसके बारे में पूरी स्वतंत्रता से कोई राय क़ायम कर सकें। मौजूदा समय में ये लाइब्रेरी लकड़ी से बनी एक झोपड़ी जैसी इमारत में क़ायम है। अमेरिकी वेबसाइट हेंगर डेली न्यूज के मुताबिक इस लाइब्रेरी के व्यवस्थापक गण विभिन्न लोगों और लाइब्रेरियों से प्रतिबंधित किताबें खरीदने या दान में लेने के लिए भी तैयार है।

(सशुक्रिया मासिक मआ़रिफ उर्दू आजमगढ़, मई 2022)

ऑक्सफर्ड ने चुना 2022 का शब्दः—

ऑक्सफर्ड डिक्शनरी ने *'Goblin Mode'* को इस साल का शब्द चुना है। इसका मतलब, ''एक प्रकार का व्यवहार है'' जिसमें व्यक्ति बिना किसी अफसोस के आलसी, मैला—कुचैला या लालची होता है और एक तरह से सामाजिक मानदण्डों या अपेक्षाओं को नकारता है।

न्यूजीलैंड में युवाओं का सिगरेट खरीदना बैन :—

न्यूजीलैंड ने युवाओं के सिगरेट खरीदने पर आजीवन बैन लगा कर स्मोकिंग को चरणबद्ध खत्म करने की योजना को कानूनी रूप दिया। 1 जनवरी 2009 या उसके बाद पैदा शख़्स को तंबाकू नहीं बेच सकते हैं।

अर्जेंटीना बना फुटबाल का सरताजः—

फीफा विश्वकप 2022 जिसने तकरीबन एक माह से पूरे विश्व जगत का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रखा था आज उसका समापन पूरे धूमधाम से हो गया। और अर्जेंटीना के मसीहा बने लियोनेल मेसी और एंजेल डी मारिया ने 36 साल के लंबे इंतजार और अंतराल के बाद अपने देशवासियों के सपने को साकार कर दिया।

कतर भी इस वक्त फीफा विश्वकप के शानदार और भव्य आयोजन की वजह से पूरे विश्व के प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में पहले दिन से ही चर्चा में बना रहा, सिर्फ इसलिए नहीं कि वह फीफा विश्वकप की मेजबानी कर रहा है बल्कि जिस तरह उसने अपनी अहमियत को मनवाया, और इस्लामी तहजीब व सभ्यता का लोहा मनवाया, और यह कह के ''कि 28 दिन के खेल के लिए हम कतरी अपना मजहब तब्दील नहीं कर सकते''।

इस पर क़तर को जितना मुबारक बाद दिया जाए वह कम है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوة العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021

تاریخ

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्डिंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।
नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/— (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखेंः
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजेंः
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **8736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
—ःतअ़मीरः—
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in